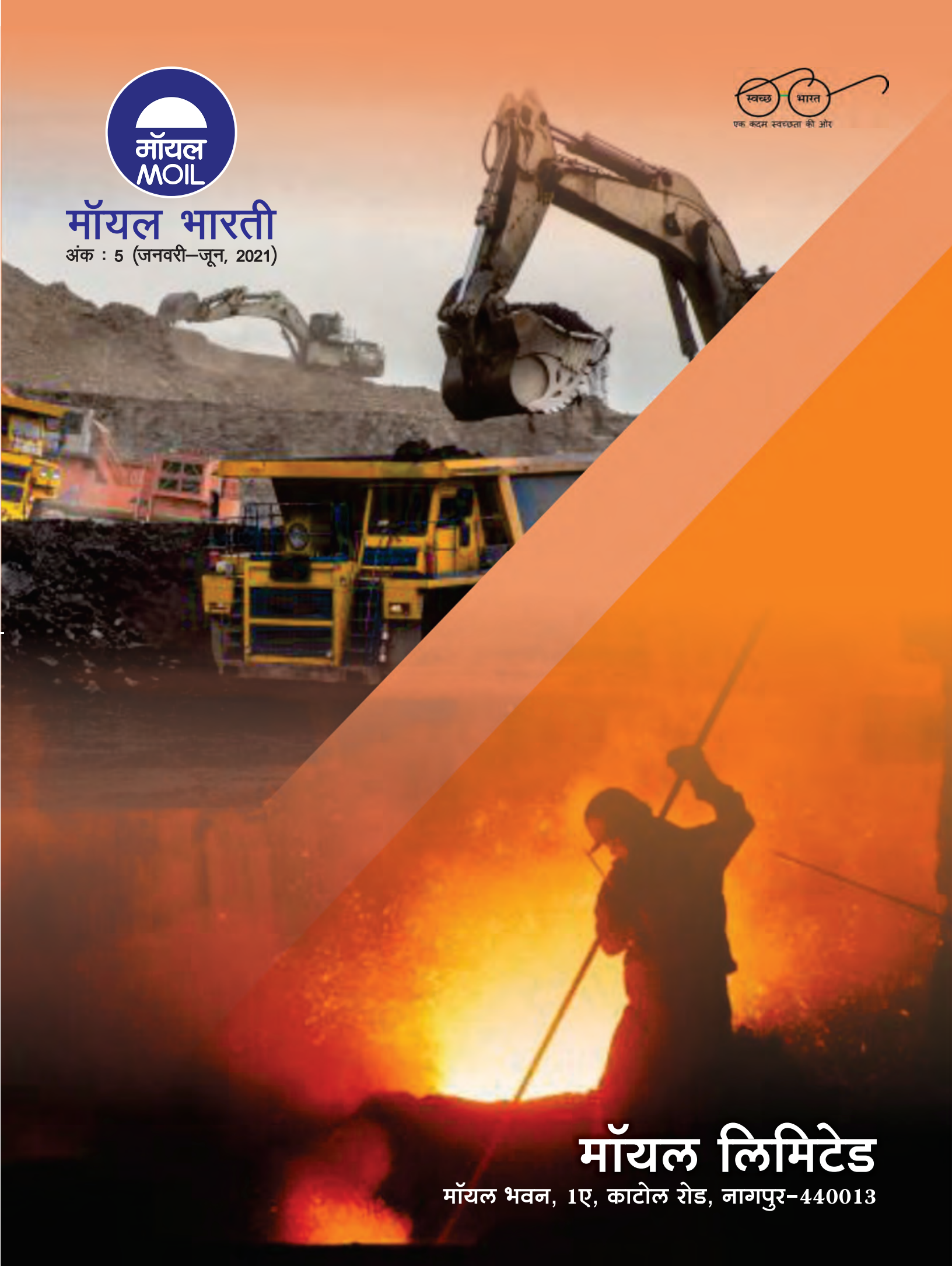

मॉयल भारती

अंक : 5 (जनवरी–जून, 2021)

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

मॉयल लिमिटेड

मॉयल भवन, 1ए, काटोल रोड, नागपुर-440013

एक सुबह होगी!

एक सुबह होगी,
जब लोगों के कंधों पर ऑक्सीजन सिलेंडर नहीं दफ्तर का बैग होगा,
गली में एंबुलेंस नहीं स्कूल की वैन होगी,
और भीड़ दवाखानो पर नहीं चाय की दुकानों पर होगी।

एक सुबह होगी
जब पेपर के साथ पापा को काढ़ा नहीं चाय मिलेगी,
दादाजी बाहर निकल कर बेखौफ पार्क में गोते लगाएंगे,
और दादी टेरेस पर नहीं मंदिर में जल चढ़ाकर आएंगी।

एक सुबह होगी
जब हाथों में कैरम और लूडो नहीं बैट और बॉल होगा,
मैदानों में सन्नाटा नहीं शोर का भार होगा,
शहरों की सारी पाबंदियां हटेगी और फिर से त्यौहार होगा।

एक सुबह होगी
जब जी भर के सबको गले लगाएंगे,
कड़वी यादों को दफन कर फिर से मुस्कुराएंगे,
और दुनिया को कह देंगे नजरे झुका लो हम फिर से वापस आए हैं ।।

एक सुबह होगी, जरूर होगी।

संपादक मण्डल

मुकुंद पी. चौधरी
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

उषा सिंह
निदेशक (मानव संसाधन)

डी. वी. राजू
कार्यपालक निदेशक (कार्मिक)

एन.डी. पाण्डेय
कंपनी सचिव

पूजा वर्मा
राजभाषा अधिकारी

संपादकीय

प्रिय पाठकगण! आप सभी को सादर नमस्कार।

राजभाषा की सतत यात्रा में 'मॉयल भारती' का यह पाँचवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। कम्पनी के अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक महोदय से मिली प्रेरणा ने मॉयलकर्मियों में राजभाषा के प्रति जबरदस्त उत्साह पैदा किया है। राजभाषा संबंधित तथ्यपरक सामग्री के साथ ही हिन्दी के अनन्य साधक फादर कामिल बुल्के का भी स्मरण किया गया है। व्यवहारिक कामकाज को समझने के लिए 'निविदा' प्रारूपण पर भी चर्चा की गई है तो अदालत में अपनी भाषा बोलने के अधिकार को भी समझाया गया है।

इस अंक में राजेश श्रीवास्तव, दिनेश कनोजे 'देहाती', इम्मानुएल 'दीप', अमित कुमार सिंह, गौसिया शफ़ाक़ ख़ान और उपेन्द्र पाण्डेय जैसे स्तरीय साहित्यकारों की कविताएं संकलित हैं। मेघा भारतकर ने ऑक्सीजन को लेकर चेताया है। लीशा नायडू ने बेटियों के महत्व को रेखांकित किया है। फुटकर रचनाओं में लघुकथाओं का भी समावेश किया गया है। पत्रिका में कोरोना से प्रभावित सामग्री भी संकलित है।

आप सभी के सहयोग और प्रेरणा से मॉयल भारती को खूब सराहना मिल रही है और इसी का प्रतिफल है कि मॉयल भारती डिजीटल रूप में राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) की वेबसाइट पर भी उपलब्ध है। इस अंक पर भी आपकी प्रतिक्रिया आमंत्रित है। कोरोना काल में आप और आपका परिवार स्वस्थ और सुखपूर्वक रहे, इसी मंगलकामना के साथ...धन्यवाद!

(पूजा वर्मा)
संपादक – मॉयल भारती

हिंदी में राष्ट्रभाषा बनने की पूरी क्षमता है। – राजा राममोहन राय

अनुक्रमणिका

1.	संपादक मंडल/संपादकीय	01
2.	संदेश	03-06
3.	राजभाषा कार्यान्वयन वार्षिक कार्यक्रम 2021-22	07
4.	परिभाषाएं	08-09
5.	कैसे हिंदी बनी थी राजभाषा	10-11
6.	फादर कामिल बुल्के : एक अनन्य हिंदी साधक	12-13
7.	मॉयल में राजभाषा कार्यान्वयन और निविदा प्रकाशन	14-17
8.	अदालत में अपनी भाषा बोलने का अधिकार	18-20
9.	हिंदी में काम करते समय ध्यान देने योग्य बातें	21
10.	पत्राचार में प्रयोग होने वाले वाक्यांश	22
11.	दैनिक प्रयोग के शब्द	23
12.	शुद्ध-अशुद्ध और विपरीत शब्द	24
13.	राजभाषा विभाग : सचिव का परिपत्र	25-27
14.	चार कविताएं : मेरा मन समझती है/दरिया की रवानी है/ दर्द गहरा होता है/दर्द दिखलाता नही हूँ	28-29
15.	पानी	30-31
16.	शब्दों का संसार/नई उम्मीद	32-33
17.	कोरोना	34
18.	मॉयल भारती अब ऑनलाइन उपलब्ध है।	35
19.	जलवायु परिवर्तन और टिकाऊ विकास	36-37
20.	मॉयल में नवीनीकरणीय ऊर्जा का प्रचलन	38-39
21.	कदम मिलाते चलो/मदर्स डे	40-41
22.	ठहर जायेगा/पल्लेदार	42-43
23.	मैं मकान लेकर कही जाऊँगा थोड़े ही	44-45
24.	छात्र के साथ बातचीत/बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ	46-47
25.	प्राणवायु (ऑक्सीजन)	48-49
26.	शिक्षक दिवस	50-51
27.	आत्मविश्वास	52-53
28.	पेशेवर तरीके से ईमेल कैसे लिखें?	54-55
29.	पॉजिटिविटी/प्रतिक्रियाएं	56-57
30.	फोटो गॅलरी	58-59
31.	अखबारी हलचल	60

हिंदी का श्रृंगार राष्ट्र के सभी भागों के लोगों ने किया है, वह हमारी राष्ट्रभाषा है। – चक्रवती राजगोपालाचारी

मुकुंद पी. चौधरी
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

मॉयल लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए काटोल रोड,
नागपूर-440013

संदेश

प्रिय साथियों,

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि मॉयल लिमिटेड के राजभाषा विभाग की पत्रिका 'मॉयल भारती' के नये अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

भाषा मानव मन की भावनाओं को अभिव्यक्त करने का साधन होने के साथ-साथ एक दूसरे से जुड़ने का माध्यम भी है। संस्कृति, आचार-विचार, वेष-भूषा, ज्ञान-विज्ञान, कला, अध्यात्म के समस्त चिंतन के प्रसार की भाषा होती है। यह सच ही कहा गया है कि ''भाषा सभ्यता को संस्कारित करने वाली वीणा एवं संस्कृति को शब्द देने वाली वाणी है''।

मैं पत्रिका के पाँचवे अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिको का अभिनंदन करते हुए आप सभी को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

मुकुन्द पी. चौधरी

राकेश तुमाने
निदेशक (वित्त)
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए काटोल रोड,
नागपूर-440013

संदेश

प्रिय साथियों,

हमें अपनी भाषायी विविधता पर गर्व होना चाहिए। हमारी भाषाएं हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं और उनका साहित्यिक इतिहास समृद्ध रहा है। मेरा मानना है कि हिंदी के प्रचार प्रसार को उत्तरोत्तर बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि हम हिंदी को अपनी मूल चिंतन का माध्यम बनाएं वार्तालाप एवं संवाद के साथ–साथ लेखन कार्य में भी अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग करें। हिंदी एक ऐसी भाषा है जो हमें एक दूसरे से जोड़ती है। यह देश में सबसे अधिक बोली व समझी जाने वाली भाषा है।

इस प्रयास के लिए मैं राजभाषा विभाग की प्रशंसा करता हूँ तथा मॉयल और 'मॉयल भारती' के निरंतर विकास की कामना करता हूँ।

(राकेश तुमाने)

राष्ट्रभाषा की उपेक्षा से देश का भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। – श्रीमती महादेवी वर्मा

उषा सिंह

निदेशक (मानव संसाधन)

मॉयल लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

मॉयल भवन, 1ए काटोल रोड,

नागपूर-440013

संदेश

प्रिय हिन्दी प्रेमियो,

यह प्रसन्नता का विषय है कि राजभाषा विभाग प्रत्येक छःमाही में 'मॉयल भारती' पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है।

भारत एक विशाल लोकतांत्रिक देश है। यहाँ विभिन्न भाषाओं, बोलियों एवं संस्कृतियों का संगम है। हिंदी ने संपर्क भाषा के रूप में राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हर भारतीय को अपनी मातृभाषा हिंदी पर गर्व है, जो एक अत्यंत सरल, समृद्ध और सशक्त भाषा है।

इस अंक में 'कैसे हिंदी भाषा का विकास हुआ, राजभाषा क्या है, हिंदी दिवस का महत्व' और 'अदालत में अपनी भाषा बोलने का अधिकार' जैसे रोचक रचनाओं का समावेश किया गया है। आशा है कि यह अंक भी अन्य अंकों की भाँति अपने पाठकों को भायेगा।

पत्रिका के पाँचवें अंक के लिए बधाई देती हूँ और 'मॉयल भारती' के निरंतर विकास की कामना करती हूँ।

उषा सिंह

(उषा सिंह)

हमारी राष्ट्रभाषा की गंगा में देशी और विदेशी सभी शब्द मिलकर एक हो जाएंगे। – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

पी.व्ही.व्ही. पटनायक
निदेशक (वाणिज्य)
अति.का.भा.निदेशक (उ.ए.यो.)
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए काटोल रोड,
नागपुर-440013

संदेश

प्रिय साथियों,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि मॉयल भारती के पाँचवे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। यह प्रत्येक व्यक्ति की अस्मिता का स्रोत और समाज की सांस्कृतिक पहचान की कड़ी है। हम सबका नैतिक एवं संवैधानिक कर्तव्य है कि अपने कार्यालयीन कामकाज में अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग सुनिश्चित करें। ऐसी पत्रिकाओं से हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा मिलता है। साथ ही कर्मचारियों की लेखनकला विकसित होती है।

'मॉयल भारती' के प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(पी.व्ही.व्ही. पटनायक)

भारत की उन्नति में एक महत्वपूर्ण मंजिल हिंदी को अंतिम रूप में राजभाषा बनाना है। – कु. मार्गोत हेलजिंग

कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.स.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (तार बेतार, टेलेक्स, फैक्स, ई–मेल आदी सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख 100% क्षेत्र के राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति को	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख 90% क्षेत्र के राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति को	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख 85% क्षेत्र के राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति को
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पणी	75%	50%	30%
4.	हिंदी टंकक, आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
5.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वंय अथवा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
6.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपिक)	100%	100%	100%
7.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
8.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोडकर, पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई–पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रिय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर खर्च की गई राशि सहित हिंदी पुस्तको आदि की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
9.	कंप्युटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रानिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
10	वेबसाइट	100% द्विभाषी	100% द्विभाषी	100% द्विभाषी
11	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डो आदि का प्रदर्शन	100% द्विभाषी	100% द्विभाषी	100% द्विभाषी
12	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% न्यूनतम	25% न्यूनतम	25% न्यूनतम
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% न्यूनतम	25% न्यूनतम	25% न्यूनतम
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
13	राजभाषा संबंधी बैठकें			
(क)	हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 2 बैठकें (कम से कम)		
(ख)	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
(ग)	राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
14	कोड, मेनुअल, फॉर्म, प्रकिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%		
15	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहॉ संपूर्ण कार्य हिंदी में हो।	"क" क्षेत्र 40%	"ख" क्षेत्र 30% (न्यूनतम अनुभाग)	"ग" क्षेत्र 20%
16.	सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहॉ अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्यक्षेत्र का 40% , "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।			

राष्ट्र को राष्ट्रध्वज की तरह राष्ट्रभाषा की आवश्यकता है और यह स्थान हिंदी को प्राप्त है। – अनन्त गोपाल शेवड़े

परिभाषाएं

1. हिन्दी में प्रवीणता – किसी कर्मचारी के बारे में यह समझा जाएगा कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है यदि उसने –

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसके समकक्ष या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी को माध्यम के रूप में अपना कर उत्तीर्ण की है; अथवा

(ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के समकक्ष या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को उसने एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था; अथवा

(ग) वह यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है।

2. हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान – किसी कर्मचारी के बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, यदि उसने –

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसके समकक्ष या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण की है; अथवा

(ख) केन्द्रीय सरकार की हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट वर्ग के पदों के संबंध में निर्धारित कोई निम्नस्तर परीक्षा उत्तीर्ण की है; अथवा

(ग) केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्धारित कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

(घ) यदि वह यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976

नियम 2 (च) 'क' क्षेत्र से बिहार, झारखण्ड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य, उत्तरांचल और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह तथा दिल्ली के संघ राज्यक्षेत्र अभिप्रेत हैं।

(छ) 'ख' क्षेत्र से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य और चंडीगढ़, दमन एवं दीव तथा दादरा व नगर हवेली संघ राज्यक्षेत्र अभिप्रेत हैं।

(ज) 'ग' क्षेत्र से खण्ड (च) और (छ) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं।

नियम 8 केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणियों का लिखा जाना।

(1) कोई कर्मचारी किसी फाईल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिन्दी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

(4) उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी केन्द्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा जिन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त हैं, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा।

नियम 10 (2) यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों अधिकारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्य तया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्य साधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

नियम 10 (4) केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों के अस्सी प्रतिशत कर्मचारियों अधिकारियों ने हिन्दी का कार्य साधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे।

परन्तु, यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करनेवाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखनेवाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख से उप–नियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालयीन ही रह जाएगा।

नियम 11 मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रियासंबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि–

(1) केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रियासंबंधी अन्य साहित्य हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

देश के विश्वविद्यालयों ने राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति अपने कर्तव्य को नहीं निभाया। – डॉ. सम्पूर्णानन्द

(2) केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जानेवाले रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।

(3) केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचनापट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी।

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा आवश्यक समझती है तो वह साधारण या विशेष आदेश द्वारा केन्द्र सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

नियम 12 अनुपालन का उत्तरदायित्व

(1) केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह :–

(क) यह सुनिश्चित करें कि अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है और

(ख) इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करें।

(2) केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय–समय पर आवश्यक निर्देश जारी कर सकती है।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) से उद्धरणर

(3) उपधारा (1) में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी हिन्दी और अंग्रेजी भाषा दोनों ही–

(क) संकल्पों, साधारण आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदनों या प्रेस विज्ञप्तियों के लिए जो केन्द्रीय सरकार द्वारा या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी नियम या कम्पनी द्वारा या ऐसे निगम या कंपनी के किसी कार्यालय द्वारा निकाले जाते हैं या किए जाते हैं।

(ख) संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदनों और राजकीय कागज–पत्रों के लिए।

(ग) केन्द्रीय सरकार या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या उसकी ओर से या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी द्वारा या ऐसे निगम या कम्पनी के किसी कार्यालय द्वारा निष्पादित संविदाओं और करारों के लिए तथा निकाली गई अनुज्ञप्तियों, अनुज्ञापत्रों, सूचनाओं और निविदा–प्रारूपों, के लिए प्रयोग में लाई जाएगी।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) के अनुसार सामान्य आदेश में निम्नलिखित सम्मिलित है–

(1) ऐसे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हों और जो स्थायी प्रकार के हों।

(2) ऐसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों के संबंध में हों या उनके लिए हों।

(3) ऐसे सभी परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हों या सरकारी कर्मचारियों के लिए हों।

राजभाषा, अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत अनिवार्यतः द्विभाषी (हिंदी–अंग्रेजी) रूप में जारी किए जाने वाले कागजात

▸ 1) सामान्य आदेश (General Orders) ◦ -कार्यालय आदेश (Office Order) ◦ -कार्यालय टिप्पणी (Office Note) ◦ -ज्ञापन (Memorandum) ◦ -परिपत्र (Circular)	8) करार/अनुबंध (Agreement
2)सूचना (Notice)	9) अनुज्ञप्ति (License)
3) विज्ञापन (Advertisement)	10) अनुज्ञा पत्र (Permit)
4) निविदा/निविदा सूचना (Tender)	11)नियम/विनियम/अधिनियम(Rules/Regulation/Act)
5) अधिसूचना (Notification)	12) संकल्प (Resolution)
6) प्रैस विज्ञप्ति/टिप्पणियाँ (Press Communiqués)	13) प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन (Administrative or other Reports)
7) संविदा (Contract)	14) संसद के एक या दोन सदन के समक्ष प्रस्तुत किए जाने वाले दस्तावेज़ (Documents to be put in the Parliament)

कैसे हिंदी बनी थी राजभाषा

गीतु पटले
तिरोड़ी खान

हिंदी को राजभाषा का दर्जा 14 सितंबर, 1949 को मिला और संविधान के भाग–17 में इससे संबंधित महत्वपूर्ण प्रावधान किये गए है। इसी ऐतिहासिक महत्व के कारण 1953 से राजभाषा प्रचार समिति द्वारा प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' का आयोजन किया जाता है। हिन्दी के प्रोत्साहन की दृष्टि से इस दिवस के आयोजन का महत्वपूर्ण स्थान है।

हिंदी भारतीय गणराज्य की राजकीय और मध्य भारतीय की आर्यभाषा है। 2001 कि जनगणना के अनुसार लगभग 25.79 करोड़ भारतीय हिन्दी का उपयोग मातृभाषा के रूप में करते है। जबकि लगभग 42.20 करोड़ लोग इसकी 50 से अधिक बोलियो में से एक इस्तेमाल करते है। हिन्दी की प्रमुख बोलियो में अवधी, भोजपुरी, ब्रजभाषा, छत्तीसगढ़ी, गढ़वाली, हरियाणवी, कुमाऊँनी, मागधी और मारवाड़ी भाषा शामिल है।

कैसे हिन्दी बनी राजभाषा :–

साल 1947 में जब अंग्रेजी हुकूमत से भारत आजाद हुआ तो उसके सामने भाषा को लेकर सबसे बड़ा सवाल था। क्योंकि भारत मे सैकड़ो भाषाएँ और बोलियां बोली जाती है। ऐसे में कौन सी राष्ट्रभाषा चुनी जाएंगी ये काफी अहम मुद्दा था। काफी सोच–विचार के बाद हिन्दी और अंग्रेजी को नये राष्ट्र की भाषा चुना गया। संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखा हिन्दी को अंग्रेजों के साथ राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के तौर पर स्वीकार किया था। 14 सितबर, 1949 को संविधान सभा ने एकमत से निर्णय लिया कि हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी। विदित हो कि 26 जनवरी, 1950 को जब हमारा संविधान लागू हुआ तो इसमें देवनागरी में लिखी जाने वाली सहित 14 भाषाओं को आठवीं सूची में आधिकारिक भाषाओं के रूप में रखा गया था पर संविधान के मुताबिक 26 जनवरी, 1965 में हिन्दी को अँग्रेजी के स्थान पर देश की आधिकारिक बनाना था, और उसके बाद हिन्दी में ही विभिन्न राज्यों को आपस में और केन्द्र के साथ संवाद करना था।

ऐसा आसानी से हो सके इसके लिये संविद्यान में 1995 और 1960 में राजभाषा आयोग को बनाने की बात कही गई थी। इन आयोगों को हिन्दी के विकास के सन्दर्भ में रिपोर्ट देनी थी और इन रिपोर्ट के आधार पर संसद की संयुक्त समिति के द्वारा राष्ट्रपति को इस संबध में कुछ सिफारिश करनी थी।

भारत की अखंडता और व्यक्तित्व बनाए रखने के लिए हिंदी का प्रचार अत्यंत आवश्यक है। – महाकवि जी. शंकर कुरूप

भारत के बहुभाषी होने की वजह से हिन्दी को नहीं मिल रहा है बढ़ावा :–

भारत बहुभाषी देश है जहाँ अलग–अलग क्षेत्रों की अलग–अलग भाषा और बोलियाँ हैं। इनमें से किसी का भी महत्व हिन्दी से कम नहीं है। लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर कोई एक ऐसी भाषा नही है, जिसे सभी राज्यों या इलाको को जोड़ने वाली भाषाओ का दर्जा प्राप्त है। हालांकि अतीत में भाषाओं को लेकर जिस तरह के विवाद हो चुके है। इनके मद्देनजर हिन्दी को बढ़ावा देते समय यह भी ध्यान रखना होगा कि इसकी वजह से दूसरी भाषाओं पर कोई नकारात्मक असर न पड़े।

सरकारी स्तर पर बढ़ावा देने की जरूरत :–

उत्तर भारत के लगभग सभी हिस्सों में साधारण लोगों की बोलचाल, पढ़ाई–लिखाई से लेकर संस्थागत स्तर तक हिंदी को जगह मिली हुई है। लेकिन, इसके अलावा भी देश के ज्यादातर इलाकों में हिंदी ने जो जगह बनाई है, उसमें इसके विकास और प्रसार की बड़ी संभावनाएं हैं। पर यह तभी संभव हो पाएगा जब सरकार के स्तर पर इसके प्रयोग को बढ़ावा दिया जाएगा और कुछ मामलों में इसे अनिवार्य भी बनाया जाएगा।

जीने की कला

एक शाम माँ ने दिनभर की लम्बी थकान एवं काम के बाद जब डीनर बनाया तो उन्होंने पापा के सामने एक प्लेट सब्जी और एक जली हुई रोटी परोसी। मुझे लग रहा था कि इस जली हुई रोटी पर कोई कुछ कहेगा। परन्तु पापा ने उस रोटी को आराम से खा लिया परन्तु मैंने माँ को पापा से उस जली रोटी के लिए "सॉरी" बोलते हुए जरूर सुना था। और मैं ये कभी नहीं भूल सकता जो पापा ने कहा "प्रिये, मुझे जली हुई कड़क रोटी बेहद पसंद है।"

देर रात को मैने पापा से पूछा, क्या उन्हें सचमुच जली रोटी पसंद है?

उन्होंने मुझे अपनी बाहों में लेते हुए कहा – तुम्हारी माँ ने आज दिनभर ढ़ेर सारा काम किया, और वो सचमुच बहुत थकी हुई थी। और...वैसे भी...एक जली रोटी किसी को ठेस नहीं पहुंचाती परन्तु कठोर–कटू शब्द जरूर पहुंचाते हैं।

तुम्हें पता है बेटा – जिंदगी भरी पड़ी है अपूर्ण चीजों से...अपूर्ण लोगों से... कमियों से...दोषों से...मैं स्वयं सर्वश्रेष्ठ नहीं, साधारण हूँ और शायद ही किसी काम में ठीक हूँ।

मैंने इतने सालों में सीखा है कि–

"एक दूसरे की गलतियों को स्वीकार करों...अनदेखी करों... और चूनो... पसंद करो...आपसी संबंधों को सेलिब्रेट करना।"

मित्रों, जिदंगी बहुत छोटी है...उसे हर सुबह दुःख... पछतावे...खेद के साथ जागते हुए बर्बाद न करें। जो लोग तुमसे अच्छा व्यवहार करते हैं, उन्हें प्यार करों ओर जो नहीं करते उनके लिए दया सहानुभूति रखो।

किसी ने क्या खूब कहा है–

"मेरे पास वक्त नहीं उन लोगों से नफरत करने का जो मुझे पसंद नहीं करते,

क्योंकि मैं व्यस्त हूँ उन लोगों को प्यार करने में जो मुझे पसंद करते हैं।"

तो मित्रों, जिदंगी का आनंद लीजिये...उसका लुत्फ उठाइए...उसकी समाप्ति... उसका अंत तो निश्चित है. .....। अतः आप सब स्वस्थ रहें, सुखी रहें एवं समृद्ध रहें, साथ ही अपने काम में व्यस्त रहें एवं मस्त रहे।

'सदैव प्रसन्न रहिये!!'
'जो प्राप्त है–पर्याप्त है!!'

राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिए सारे देश में हिंदी और नागरी का प्रचार आवश्यक है। – लाला लाजपत राय

आशीष सूर्यवंशी

एक अनन्य हिंदी साधक

फादर कामिल बुल्के :

यूँ ही हिंदी किसी की ज़बान पर आसानी से नहीं चढ़ जाती है। हिंदी की वैज्ञानिक विशेषताओं का ही प्रभाव है कि यह श्रोता के मस्तिष्क में बड़े आराम से रच–बस जाती है। फिर इसका साहित्य भण्डार भी भाषाप्रेमियों और पाठकों को आकर्षित करता ही है। इस क्रम में, केवल भारतीय ही नहीं अपितु विदेशी भी हिंदी के अच्छे साहित्यकार हुए हैं। गार्सा द ताकी, सर जॉर्ज ग्रियर्सन इत्यादि की परम्परा में एक आदरणीय नाम **फादर डॉ. कामिल बुल्के** का भी है। फादर बुल्के ने हिंदी के भाषा पक्ष पर सार्थक काम किया है। हिंदी भाषा को समृद्ध बनाने में उनका योगदान भी उल्लेखनीय है। आज हिंदी भाशा के माध्यम से रोजी–रोटी तलाश रहे युवाओं को अपने कौशल में धार लाने के लिए उनके शब्दकोश और साहित्य को जरूर देखना–समझना चाहिए। लोग उन्हें भूलते जा रहे हैं ऐसे में उनका स्मरण और उनके साहित्य से पाठकों का परिचय होना समीचीन है।

फादर कामिल बुल्के का जन्म 1 सितंबर, 1909 को बेल्जियम में हुआ था। वे बचपन से ही कुशाग्र, अध्यवसायी और भाषाप्रेमी थे। उन्होंने आरंभ में इंजीनियरिंग फिर दर्शनशास्त्र की पढ़ाई की। इसके बाद मिशनरी काम से जुड़ गए। मिशनरी के रूप में भारत आए और यहीं के होकर रह गए। वह संत जेवियर्स कॉलेज, राँची के संस्कृत और फिर हिंदी विभाग से जुडे रहे। फादर बुल्के ने साहित्य साधना के द्वारा हिंदी की जो सेवा की है वह अविस्मरणीय है। उनकी महत्वपूर्ण कृतियों में मुक्तिदाता, न्याय वैशेशिक, रामकथा उत्पत्ति और विकास, अँग्रेज़ी–हिंदी कोश, नया विधान प्रमुख है।

उन्होंने अनुवाद कार्य भी किए जिनमें मातरलिक के प्रसिद्ध नाटक 'ब्लू बर्ड' का नीलपंछी नाम से रूपांतर भी है। अँगेज़ी–हिंदी डिक्शनरी का जिक्र हो और फादर कामिल बुल्के का नाम न आए, यह हो नहीं सकता। फादर की दो कृतियों ने उन्हें हिंदी ही नहीं भारत का भी अमूल्य धरोहर बना दिया। एक शब्दकोश और दूसरा रामकथा का उनका शोध।

किसी विदेशी विद्वान की रामकथा में इतनी अटूट श्रद्धा जबकि वह एक मिशनरी हो, वास्तव में अचरज पैदा करती है। रामकथा के आदर्श ने फादर बुल्के को खूब आकर्षित किया। यही कारण था कि वे रामचरितमानस के अध्येता बन गये। उन्हें मानस के रचयिता तुलसीदास के प्रति भी श्रद्धानत पाया गया। भक्ति साहित्य के प्रति उनके ऐसा अनुराग उनके महात्मा मानस को भी उद्घाटित करता है। उनका शोध कार्य **'रामकथा : उत्पत्ति और विकास'** के माध्यम से उन्होंने नये तथ्यों को उजागर किया। उनके अनुसार राम का चरित्र मनगढन्त या काल्पनिक नहीं है। यह ऐतिहासिक है और दिग्विजयी कथा है। ये एक ऐसा महान चरित्र है जिसने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समाज के ऊपर छाप छोड़ी है। आज भी विश्व के विभिन्न हिस्सों में राम हर प्रकार से उपलब्ध हैं। चाहे वह चित्र हो, मूर्ति हो, कथा हो, पुस्तक हो या नाटक हो हर जगह राम मिल जाएंगे। दक्षिण एशिया में कई प्रकार की रामायण उपलब्ध है इससे इस युगपुरूष की उपस्थिति का प्रमाण मिलता है। इस शोध की वजह से ही उन्हें भारतीय मनीषियों में सम्मानजनक आसन प्राप्त हुआ। हालाकि फादर ज्यादातर वक्त झारखंड में रहे। शोध की वजह से इलाहाबाद से उनका नाता रहा। उन्होंने पीएच.डी. इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से ही की थी। हिंदी विभाग के तत्कालीन अध्यक्ष प्रोफेसर धीरेन्द्र वर्मा के मार्गदर्शन में रामकथा पर उनका शोध मील का पत्थर माना जाता है। लेकिन झारखंड उन्हें थोड़ा–बहुत भले ही याद रखता हो पर इलाहाबाद भूल चुका है। हाँ, यूपी का **अयोध्या शोध संस्थान** उन्हें रामकथा मर्मज्ञ के रूप में अब याद करने लगा है। बुल्के को याद करने की सबकी अलग–अलग वजह है। यूपी उन्हें रामकथा की वजह से याद कर रहा है। देश भर में खुले विश्वविद्यालय उन्हें भाषा और शिक्षा के लिए याद करते हैं।

फादर को लेकर पहले झारखंड की बात करें तो राँची का पुरूलिया रोड पर एक मनरेसा हाउस है। इलाहाबाद से लौटने पर बुल्के वहीं रहा करते थे। यहाँ का हर कोना फादर बुल्के की याद सहेजे है। सन् 1983 में यहाँ **डॉ. फादर कामिल बुल्के शोध संस्थान** की स्थापना की गयी। संस्थान की मदद से हिंदी और संस्कृत में तीन सौ से अधिक लोग पीएच.डी. कर चुके हैं। मरनेसा हाउस में उनके नाम पर एक समृद्ध लाइब्रेरी है। यहाँ सालभर हिंदी की अर्थवता, हिंदी का भाषा संस्कार और डॉ बुल्के के योगदान पर शोध कार्य चलता रहता हैं वहाँ बुल्के की सभी किताबें मिल जाएंगी। मनरेसा हाउस के जिस कमरे में इलाहाबाद से आने पर फादर रहा करते थे, वह कमरा अब टूट चुका है। वहाँ एक सेवी संस्थान है। पर अब भी एक कमरा मौजूद है जहाँ फादर ने कई साल गुजारे। मनरेसा हाउस से आधा किलोमीटर की दूरी पर संत जेवियर कॉलेज है डॉ. बुल्के यही पर पहले संस्कृत और बाद में हिंदी के विभागाध्यक्ष हुए। विभाग के उत्तरवर्ती विभागाध्यक्ष डॉ. कमल बोस कहते हैं, ''फादर का हिंदी प्रेम हम सब की चेतना से सहज जुड़ा हुआ है। बेल्जियम का एक पादरी जेसुईट धर्मसंघी होने के बाद हिंदी में कैसे इतना रम गया, आसानी से यकीन नहीं आता।'' फादर के कारण ही पुरूलिया रोड के आसपास के तमाम शिक्षण संस्थानों में अँगेजी के साथ–साथ हिंदी के लिए लगाव दिखता है। 01 सितंबर, 2008 को सरकार ने पुरूलिया रोड का नाम **डॉ. फादर कामिल बुल्के पथ** कर दिया। हालाकि राँची में उनकी कोई मूर्ति स्थापित नहीं है। इस पर कामिल बुल्के शोध संस्थान के निदेशक डॉ. मथियस डुंगडुंग ने फादर के जन्मशताब्दी अवसर पर उनकी प्रतिमा स्थापित करने की माँग की थी।

भारत सरकार ने उनकी साहित्य साधना और शैक्षणिक सेवाओं का सम्मान करते हुए नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से अलंकृत किया। उनका भारत आगमन दोनों पक्षों के लिए सुखद रहा। उन्होंने भारत आने पर जो अनुभव किया था उस पर उनकी बेबाक टिप्पणी आज भी प्रासंगिक है–

''1935 में, मैं जब भारत पहुंचा, मुझे यह देखकर आश्चर्य और दुःख हुआ, मैंने यह जाना कि अनेक शिक्षित लोग अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं से अंजान थे और इंग्लिश में बोलना गर्व की बात समझते थे। मैंने अपने कर्तव्य पर विचार किया कि मैं इन लोगों की भाषा को सिद्ध करूँगा।''

एक ईसाई का विश्वास : 'हिंदी और तुलसी का भक्त' – कामिल बुल्के

फादर कामिल बुल्के एक दिग्दर्शक थे। उनका कार्य और चरित्र अनुकरणीय है। इस लेख के माध्यम से उनका स्मरण मात्र ही हो सकता है। परन्तु वास्तविक अनुगमन उनके साहित्य और कार्यों का अनुसरण करके ही हो सकता है। सादर नमन फादर बुल्के!

पूजा वर्मा
राजभाषा अधिकारी

मॉयल में राजभाषा कार्यान्वयन और निविदा प्रकाशन

भारत संघ की राजभाषा हिंदी के माध्यम से राष्ट्र की सेवा करते हुए, देश में स्थित सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बीमा कंपनियों, सार्वजनिक उद्यमों तथा बैंकों को अपने कार्य का निर्वहन करना होता है। इसी क्रम में नागपुर स्थित मॉयल लिमिटेड भी राजभाषा कार्यान्वयन को सुचारू रूप से कार्यान्वित करने के लिए तत्पर रहता है। राजभाषा संबंधी प्रावधानों के समुचित अनुपालन, अधिनियमों का सम्यक कार्यान्वयन इत्यादि उचित रूप से किया जाता है। राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अनुसार स्थायी प्रकृति के दस्तावेजों को द्विभाषी रूप में तैयार करने का नियम है। इस क्रम में बहुत से दस्तावेज ऐसे हैं जिनका प्रारूपण द्विभाषी रूप में किया जाता है, उदाहरण के लिए ज्ञापन, परिपत्र, सामान्य आदेश, सूचना, अनुज्ञप्ति, अनुज्ञा–पत्र, संविदा, करार, संसद के एक या दोनों सदनों के समक्ष प्रस्तुत किए जाने वाली रिपोर्टें और दस्तावेज इत्यादि।

यहाँ जिस संदर्भ में चर्चा की जाएगी वह दस्तावेज 'निविदा' है। एक महत्वपूर्ण दस्तावेज होता है। मॉयल लिमिटेड सार्वजनिक क्षेत्र की एक मिनीरत्न कंपनी है जो इस्पात मंत्रालय के अधीन कार्यरत है मैग्नीज़ का उत्पादन और विपणन इस कंपनी का मुख्य कार्यक्षेत्र है। अपने मुख्य कार्य के अतिरिक्त विविध प्रशासनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कंपनी की ओर से अक्सर निविदाएं आमंत्रित की जाती है, ऐसी स्थिति में निविदा का सटीक प्रारूपण और राजभाषा नियमों का सही पालन करते हुए कार्य का निर्वहन किया जाता है। मॉयल लिमिटेड का राजभाषा अनुभाग अपनी पूरी तत्परता के साथ यह सुनिश्चित करता है कि किसी भी स्तर पर राजभाषा संबंधी नियमों का उल्लंघन न होने पाए। इस क्रम में निविदा के संबंध में राजभाषा संबंधी नियमों के आलोक में इस कागजात के प्रारूपण पर चर्चा करेंगे।

निविदा का परिचय

किसी कार्य की पूर्ति अथवा किसी निर्माण कार्य को करने अथवा अनुपयोगी सामान के निपटान आदि के लिए निविदा सूचना भेजकर निविदाएं मंगाई जाती हैं। इसमें पूरा किए जाने वाले कार्य अथवा निर्माण कार्य अथवा निपटान किए जाने वाले सामान का संक्षिप्त विवरण दिया जाना चाहिए और यह भी लिख देना चाहिए कि इस संबंध में पूरा विवरण कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है। निविदा नाम का दस्तावेज एक बहुपृष्ठीय होता है। इसमें अधिसंख्य शर्तों और नियमों का उल्लेख होता है। जब किसी निविदा के दस्तावेजों की तैयारी की जाती है तो उसके प्रपत्र अनिवार्य रूप से द्विभाषी ही तैयार किए जाएंगे निविदा कोई कार्यालय कुछ बेचने या खरीदने के लिए तैयार करवाता है इसे अंग्रेजी में टेंडर कहते हैं।

निविदा की आवश्यकता

कोई सरकारी प्रतिष्ठान अपनी घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए खुले बाजार से निविदाएं, सेवा प्रदाताओं या विशेषज्ञों की सेवाएं आमंत्रित करता है। इसके लिए उस प्रतिष्ठान को पारदर्शिता बनाए रखने के लिए और उचित मूल्य पर सेवा प्राप्त करने के लिए निविदा प्रकाशित करना पड़ता है। निविदा प्रकाशन के पीछे निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं–

- सरकारी प्रतिष्ठान के द्वारा कार्यालय परिसर में सिविल कार्यों के लिए निविदा के माध्यम से सेवा प्रदाताओं को आमंत्रित करना।

देश को एक सूत्र में बांध रखने के लिए एक भाषा की आवश्यकता है। – सेठ गोविन्द दास

- प्रतिष्ठान में लेखन सामग्री इत्यादि की आपूर्ति के लिए निविदा आमंत्रित करना।
- किसी विशेष कार्य के लिए विशेषज्ञ टीम/एजेंसी को आमंत्रित करना।
- प्रतिष्ठान के निष्प्रयोज्य वस्तुओं की नीलामी या बिक्री के लिए भी निविदा प्रकाशित की जाती है।
- प्रतिष्ठान द्वारा उसके किसी परिसर या भाग को लीज पट्टे पर देने के लिए भी निविदा आमंत्रित की जाती है।

निविदा सूचना का प्रकाशन

वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी का दौर होने के कारण वेब साइटों पर निविदा संबंधी जानकारी उपलब्ध करा दी जाती है फिर भी स्थानीय अखबारों में या राष्ट्रीय महत्व के अखबारों में निविदा की संक्षिप्त सूचना प्रकाशित की जाती है ताकि इसे और उपयोगी एवं प्रतियोगी बनाकर के स्तरीय सेवा का लाभ लिया जा सके।

अखबारों में जरूरतमंद प्रतिष्ठान अपनी आवश्यकताओं को दर्शाते हुए एक संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत करते हैं जिसमें यह लिखा होता है कि अधिक जानकारी के लिए नीचे दी गई वेबसाइट पर संपर्क करें वेबसाइट पर संपर्क करने पर इच्छुक सेवा प्रदाता को निविदा संबंधी विस्तृत जानकारी और आवश्यक प्रपत्र उपलब्ध होते हैं जिन्हें भरकर वह अपनी दावेदारी प्रस्तुत करता है।

निविदा प्रपत्र का स्वरूप

निविदा प्रपत्र बहुपृष्ठीय होते हैं जिनमें कार्य से संबंधित समस्त विवरणों समस्त पक्षों की जानकारी प्रस्तुत करनी होती है। निविदा प्रपत्र में सेवा प्रदाता एजेंसी के पंजीकरण, उनके कार्यालय, उनके कार्यानुभव एवं उपलब्ध संसाधनों की जानकारी प्रस्तुत करनी होती है। इसके बाद एजेंसी का परिचय हो जाने के बाद एजेंसी के द्वारा दी जाने वाली सेवा संबंधी शर्तों की जानकारी दी जाती है। सेवा प्रदाता द्वारा दी जाने वाली सेवा को सेवाग्राही प्रतिष्ठान की आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए। निविदा प्रपत्र को दो भागों में बांटा जाता है। एक भाग फाइनेंशियल बिड और दूसरा टेक्निकल बिड कहलाता है। इन दोनों में सेवा प्रदाता विभिन्न दर्शाए गए कॉलम को भरते हुए आवश्यक दस्तावेजों को संलग्न करके निविदा के संबंध में अपनी सेवा देने के लिए अनुरोध प्रस्तुत करता है।

मॉयल लिमिटेड में निविदा सूचना का प्रकाशन

मॉयल लिमिटेड जैसी महत्वपूर्ण कंपनी में राजभाषा के नियमों का पालन करते हुए निविदा सूचना या निविदा प्रपत्र ओं को तैयार किया जाता है अर्थात इन्हें पूर्ण रूप में प्रकाशित किया जाता है उदाहरण के तौर पर एक द्विभाषी रूप में प्रकाशित हुए निविदा सूचना का नमूना आपके समक्ष प्रस्तुत है।

निविदा सूचना के इन दो नमूनों का विश्लेषण करें तो यह देखने को मिलता है कि–

- कंपनी द्वारा महत्वपूर्ण समाचार–पत्र में 'ई–निविदा सूचना' प्रकाशित की गयी है।
- कंपनी ने अपनी आवश्यकताओं का विवरण का उल्लेख क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया है।
- अलग–अलग कार्यों के लिए ई–टेण्डर के अलग कोड भी दर्शाये गये हैं।
- कार्य विवरण के बाद निविदा के विस्तृत विवरण को प्राप्त करने के लिए निर्देश दिए गए हैं।
- ई–टेण्डर सांकेतिक और परिचयात्मक जानकारी देता है इसलिए ई–टेण्डर की अन्य बातें जानने के लिए मॉयल की वेबसाइट को उल्लेख किया गया है।
- मॉयल लिमिटेड की वेबसाइट के अलावा पारदर्शिता एवं पूर्ण प्रचार को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार की एकीकृत वेबसाइट पर भी निविदा की जानकारी दी गयी है।
- अधिकृत अधिकारी की सील के द्वारा इसे सार्वजनिक रूप से प्रकाशित किया गया है।
- यह ई–निविदा सूचना एक स्थायी, सार्वजनिक एवं राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत सूचीबद्ध दस्तावेज होने के कारण द्विभाषी अर्थात् हिंदी और अँग्रेज़ी में प्रकाशित किया गया है।

अमरभारती की इस लाडली "हिंदी" के स्वरों में भारत की राष्ट्रीय आत्मा बोलती है। – डॉ. सम्पूर्णानन्द

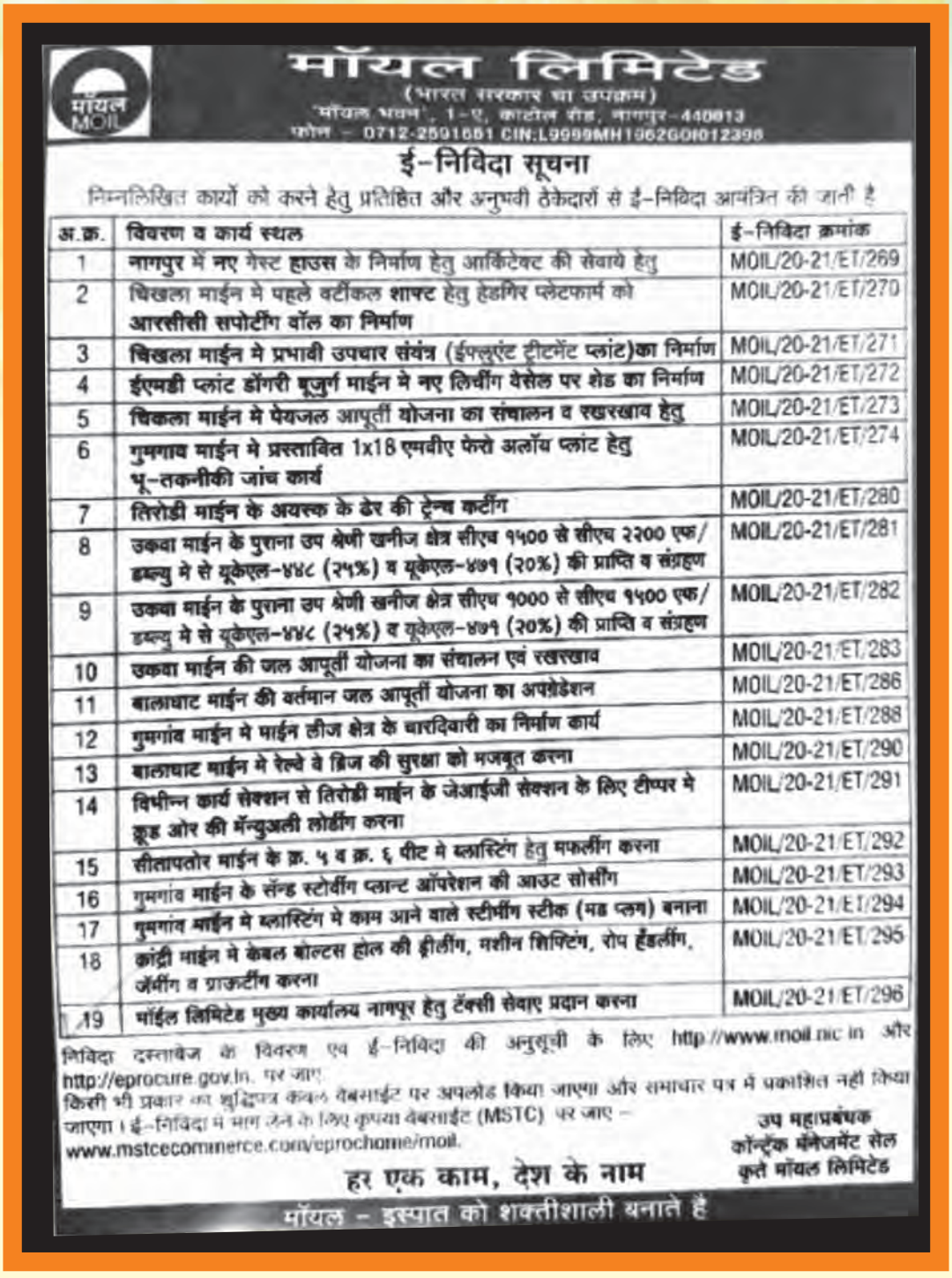

मॉयल लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

"मॉयल भवन", 1-ए, काटोल रोड, नागपुर-440013

फोन : 0712-2591551 CIN:L99999MH1962GOI012396

ई-निविदा सूचना

निम्नलिखित कार्यों को करने हेतु प्रतिष्ठित और अनुभवी ठेकेदारों से ई-निविदा आमंत्रित की जाती है

अ.क्र.	विवरण व कार्य स्थल	ई-निविदा क्रमांक
1	नागपुर में नए गेस्ट हाउस के निर्माण हेतु आर्किटेक्ट की सेवाये हेतु	MOIL/20-21/ET/269
2	चिखला माईन मे पहले वर्टीकल शाफ्ट हेतु हेडगिर प्लेटफार्म को आरसीसी सपोर्टींग वॉल का निर्माण	MOIL/20-21/ET/270
3	चिखला माईन मे प्रभावी उपचार संयंत्र (ईफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट)का निर्माण	MOIL/20-21/ET/271
4	ईएमडी प्लांट डोंगरी बुजुर्ग माईन मे नए लिचींग वेसेल पर शेड का निर्माण	MOIL/20-21/ET/272
5	चिकला माईन मे पेयजल आपूर्ती योजना का संचालन व रखरखाव हेतु	MOIL/20-21/ET/273
6	गुमगाव माईन मे प्रस्तावित 1x18 एमवीए फेरो अलॉय प्लांट हेतु भू-तकनीकी जांच कार्य	MOIL/20-21/ET/274
7	तिरोडी माईन के अयस्क के ढेर की ट्रेन्च कटींग	MOIL/20-21/ET/280
8	उकवा माईन के पुराना उप श्रेणी खनीज क्षेत्र सीएच १५०० से सीएच २२०० एफ/डब्ल्यु मे से यूकेएल-४४८ (२५%) व यूकेएल-४७१ (२०%) की प्राप्ति व संग्रहण	MOIL/20-21/ET/281
9	उकवा माईन के पुराना उप श्रेणी खनीज क्षेत्र सीएच १००० से सीएच १५०० एफ/डब्ल्यु मे से यूकेएल-४४८ (२५%) व यूकेएल-४७१ (२०%) की प्राप्ति व संग्रहण	MOIL/20-21/ET/282
10	उकवा माईन की जल आपूर्ती योजना का संचालन एवं रखरखाव	MOIL/20-21/ET/283
11	बालाघाट माईन की वर्तमान जल आपूर्ती योजना का अपग्रेडेशन	MOIL/20-21/ET/286
12	गुमगांव माईन मे माईन लीज क्षेत्र के बारदिवारी का निर्माण कार्य	MOIL/20-21/ET/288
13	बालाघाट माईन मे रेल्वे वे ब्रिज की सुरक्षा को मजबूत करना	MOIL/20-21/ET/290
14	विभीन्न कार्य सेक्शन से तिरोडी माईन के जेआईजी सेक्शन के लिए टीप्पर मे क्रूड ओर की मॅन्युअली लोडींग करना	MOIL/20-21/ET/291
15	सीतापतोर माईन के क्र. ५ व क्र. ६ पीट मे ब्लास्टिंग हेतु मफलींग करना	MOIL/20-21/ET/292
16	गुमगांव माईन के सॅन्ड स्टोवींग प्लान्ट ऑपरेशन की आउट सोर्सींग	MOIL/20-21/ET/293
17	गुमगांव माईन मे ब्लास्टिंग मे काम आने वाले स्टीभींग स्टीक (मड प्लग) बनाना	MOIL/20-21/ET/294
18	कांद्री माईन मे केबल बोल्टस होल की ड्रीलींग, मशीन शिफ्टिंग, रोप हैंडलींग, जॅमींग व प्राकटींग करना	MOIL/20-21/ET/295
19	मॉईल लिमिटेड मुख्य कार्यालय नागपूर हेतु टॅक्सी सेवाए प्रदान करना	MOIL/20-21/ET/296

निविदा दस्तावेज के विवरण एवं ई-निविदा की अनुसूची के लिए http://www.moil.nic.in और http://eprocure.gov.in. पर जाए

किसी भी प्रकार का शुद्धिपत्र केवल वेबसाईट पर अपलोड किया जाएगा और समाचार पत्र में प्रकाशित नहीं किया जाएगा। ई-निविदा में भाग लेने के लिए कृपया वेबसाईट (MSTC) पर जाए -
www.mstcecommerce.com/eprochome/moil.

उप महाप्रबंधक
कॉन्ट्रॅक्ट मॅनेजमेंट सेल
कृते मॉयल लिमिटेड

हर एक काम, देश के नाम

मॉयल - इस्पात को शक्तीशाली बनाते हैं

- इसके आगे निविदा के मूल दस्तावेज हैं जो निविदादाता को द्विभाषी उपलब्ध कराये जाते हैं जिसे वे बिना किसी असुविधा के पढ़ और समझ सकते हैं।

इस प्रकार से निविदा के दस्तावेजों का प्रारूपण द्विभाषी होना चाहिए जो राजभाषा कार्यान्वयन के अनुरूप है और सार्वजनिक तौर पर संबंधित पक्षों के लिए सहज और समझ में आने वाला होता है। मॉयल राजभाषा अनुभाग ऐसी महत्वपूर्ण सामग्री को प्राथमिकता के साथ उचित नियमों को पालन करते हुए प्रारूपित और परिचालित करता है।

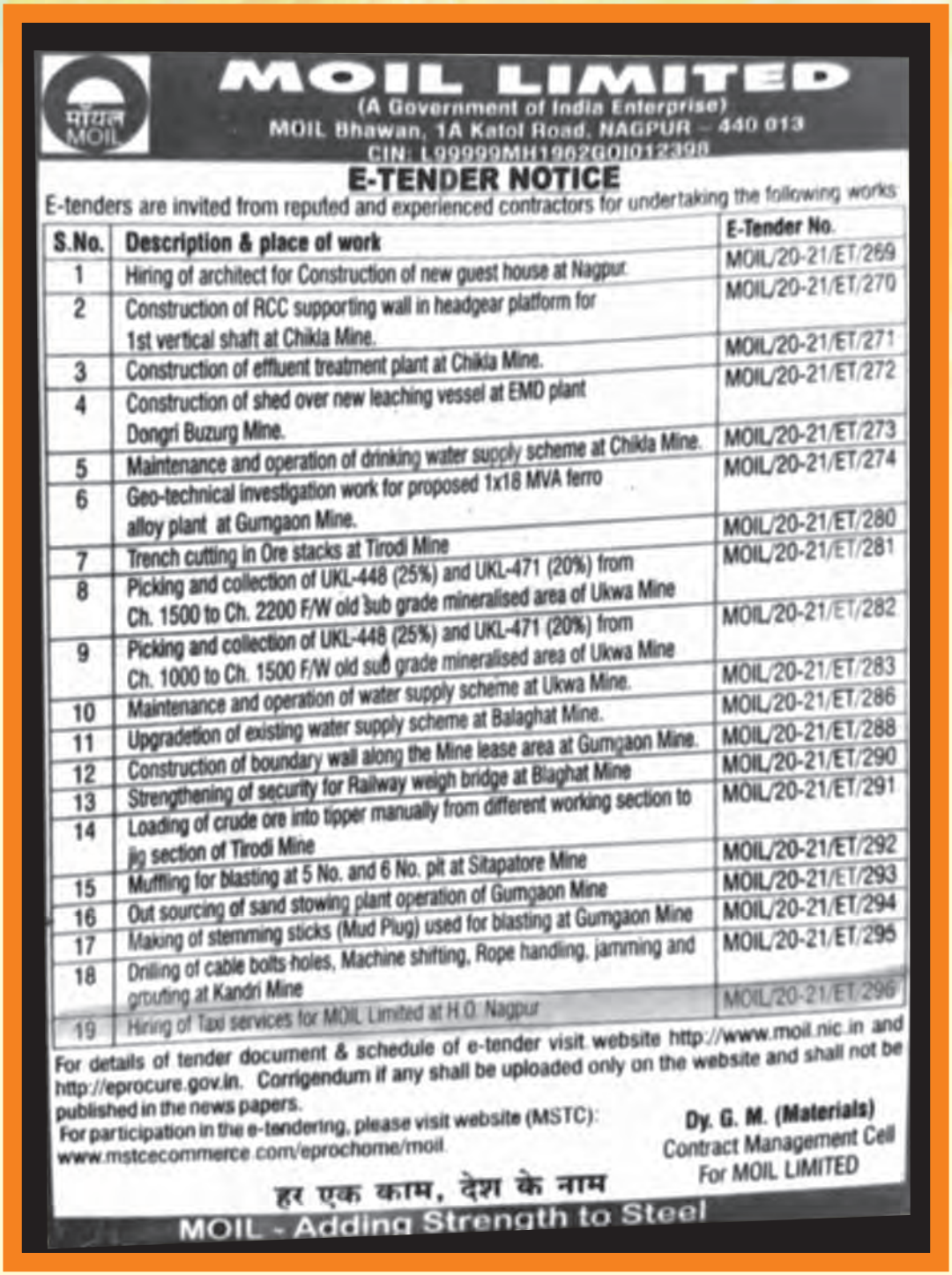

MOIL LIMITED

(A Government of India Enterprise)
MOIL Bhawan, 1A Katol Road, NAGPUR – 440 013
CIN: L99999MH1962GOI012398

E-TENDER NOTICE

E-tenders are invited from reputed and experienced contractors for undertaking the following works:

S.No.	Description & place of work	E-Tender No.
1	Hiring of architect for Construction of new guest house at Nagpur.	MOIL/20-21/ET/269
2	Construction of RCC supporting wall in headgear platform for 1st vertical shaft at Chikla Mine.	MOIL/20-21/ET/270
3	Construction of effluent treatment plant at Chikla Mine.	MOIL/20-21/ET/271
4	Construction of shed over new leaching vessel at EMD plant Dongri Buzurg Mine.	MOIL/20-21/ET/272
5	Maintenance and operation of drinking water supply scheme at Chikla Mine.	MOIL/20-21/ET/273
6	Geo-technical investigation work for proposed 1x18 MVA ferro alloy plant at Gumgaon Mine.	MOIL/20-21/ET/274
7	Trench cutting in Ore stacks at Tirodi Mine	MOIL/20-21/ET/280
8	Picking and collection of UKL-448 (25%) and UKL-471 (20%) from Ch. 1500 to Ch. 2200 F/W old sub grade mineralised area of Ukwa Mine	MOIL/20-21/ET/281
9	Picking and collection of UKL-448 (25%) and UKL-471 (20%) from Ch. 1000 to Ch. 1500 F/W old sub grade mineralised area of Ukwa Mine	MOIL/20-21/ET/282
10	Maintenance and operation of water supply scheme at Ukwa Mine.	MOIL/20-21/ET/283
11	Upgradetion of existing water supply scheme at Balaghat Mine.	MOIL/20-21/ET/286
12	Construction of boundary wall along the Mine lease area at Gumgaon Mine.	MOIL/20-21/ET/288
13	Strengthening of security for Railway weigh bridge at Blaghat Mine	MOIL/20-21/ET/290
14	Loading of crude ore into tipper manually from different working section to jig section of Tirodi Mine	MOIL/20-21/ET/291
15	Muffling for blasting at 5 No. and 6 No. pit at Sitapatore Mine	MOIL/20-21/ET/292
16	Out sourcing of sand stowing plant operation of Gumgaon Mine	MOIL/20-21/ET/293
17	Making of stemming sticks (Mud Plug) used for blasting at Gumgaon Mine	MOIL/20-21/ET/294
18	Drilling of cable bolts holes, Machine shifting, Rope handling, jamming and grouting at Kandri Mine	MOIL/20-21/ET/295
19	Hiring of Taxi services for MOIL Limited at H.O. Nagpur	MOIL/20-21/ET/296

For details of tender document & schedule of e-tender visit website http://www.moil.nic.in and http://eprocure.gov.in. Corrigendum if any shall be uploaded only on the website and shall not be published in the news papers.

For participation in the e-tendering, please visit website (MSTC): www.mstcecommerce.com/eprochome/moil

Dy. G. M. (Materials)
Contract Management Cell
For MOIL LIMITED

हर एक काम, देश के नाम

MOIL - Adding Strength to Steel

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में ऐसे दस्तावेजों के जारी होने संबंधित रिपोर्टों की समीक्षा की जाती है। अतः इसका पूरा ध्यान रखा जाता है कि किसी भी दशा में धारा 3(3) का उल्लंघन न होने पाये क्योंकि माननीय संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के समय इस प्रकृति की सामग्री का गहन निरीक्षण किया जाता है। इसलिए हम सभी का यह दायित्व है कि राजभाषा संबंधी प्रावधानों, अधिनियम, नियमों एवं विशेष आदेशों का समुचित पालन हो और इसके लिए मॉयल लिमिटेड का राजभाषा अनुभाग पूरी तत्परता से अपनी सेवाएं देने के लिए उपलब्ध रहता है।

अदालत में

अपनी भाषा बोलने का अधिकार

राम अवतार देवागंन
महामंत्री मॉयल कामगार संगठन

विधि शब्दावली : न्यायमूर्ति चंद्रेश्वर प्रसाद की अध्यक्षता में सन 1961 में गठित राजभाषा(विधायी) आयोग ने विधि पारिभाषिक शब्दावली के विकास और अधिनियमों का हिंदी में अनुवाद का कार्य आरंभ किया। आयोग के सदस्य सचिव बालकृष्ण ने भारत के संविधान का हिंदी प्रारूप तैयार किया था। हिंदी में विधि के प्रारूपण की शैली निर्धारण में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। महत्वपूर्ण विधानों का अँग्रेजी से हिंदी में अनुवाद राश्ट्रपति के प्राधिकार से प्रकाशित किया गया। 1970 में आयोग ने लगभग दस हजार प्रविष्टियों की 'विधि शब्दावली' यानी लीगल ग्लॉसरी प्रकाशित की।

व्यथा अपनी ही जुबान में बयां होः कानूनी भाषा की आलोचना दुर्बोध शैली के कारण है। साधारण बोलचाल की भाषा को कानून की भाशा सुनिश्चित और सुस्पष्ट तथा प्रयुक्त शब्दों के भाव असंदिग्ध होने चाहिए। मुकदमों की तथ्यगत भिन्नता और कानून की धारा का एकाधिकार प्रकार से अर्थान्वयन बहुधा न्यायप्रक्रिया को क्लिष्ट बना देता है। विधि को इस तरह लागू करना जिससे विधायिका का आशय पूरा हो सके, भाषायी निर्वचन से ही संभव है। हमारे अधिकांश विधान आजादी से पूर्व के, अंग्रेजों द्वारा बनाए गए रोमन विधि पर आधारित और मूलतः अँग्रेजी में है। ग्रीक और लैटिन शब्दों का यथेष्ट मात्रा में प्रयोग हुआ है। स्वातंत्रोत्तर केंद्रीय कानून अँग्रेजी में बने। राज्यों के अधिकतर कानून अँग्रेजी में हैं। विधान अँग्रेजी में होने से अँग्रेजी में व्याख्या सहज ही सुगम है। प्रादेशिक(वर्नाक्युलर) भाषाओं को लेकर राजनैतिक और सामाजिक दुराग्रहों से पृथक, संवाद की समस्या है। जिला और तालुका स्तर पर कार्यरत न्यायालय 'तथ्य के न्यायालय' कहे जाते हैं, जहाँ मौखिक और दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत किए जाते है। शीर्ष न्यायालय और उच्च न्यायालयों में अनुवाद की सुविधा उपलब्ध है, निचले न्यायालयों में क्षेत्रीय भाषा

को निषिध्द या सीमित करना न्याय को अवरूध्द करना है। व्यथा अपनी ही जुबान में बयाँ होती है।

न्यायालयों की भाषा : न्यायालयों की भाषा विधि व विधि भाष्य–ग्रंथों की भाषा पर निर्भर है। मौलिक विधि–साहित्य अँग्रेजी में है जिसकी हिंदी में रचना के बिना राजभाषा में न्याय की संकल्पना का कोई औचित्य नहीं है। इसके लिए हिंदी का विधि–कोश बढ़ाने की आवश्यकता है। केंद्रीय विधि और न्याय मंत्रालय के राजभाषा खंड द्वारा सन 1988 में विधिक क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले शब्दों के अंग्रेजी से हिंदी, लैटिन से हिंदी, हिंदी से अंग्रेजी और अरबी–फारसी से हिंदी में अर्थ सम्मिलित करते हुए करीब साढ़े चार सौ पृष्ठों में विधि शब्दावली का उत्तरवर्ती संस्करण प्रकाशित किया गया।

इसके अतिरिक्त विधिक शब्दकोश के विस्तार का कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं हुआ। पिछले दो दशक वैश्वीकरण तथा सूचना–तकनीक के रहे हैं। नये–नये कानून बने हैं। तकनीकी विषयों से जुड़े शब्दों के हिंदी और अन्य प्रादेशिक भाषाओं मे एकरूप समानार्थी शब्दों की खोज का कार्य नहीं हो सका राजभाषा आयोग की यह राय व्यवहारिक और मानने योग्य है कि जहाँ किसी कानूनी विचार को प्रकट करने के लिए स्वदेशी सूत्रों से कोई सर्वथा उपयुक्त, सरल और समान शब्द न मिले, वहाँ उस विचार के अंग्रेजी या ग्रीक या लेटिन शब्द को जैसा–का–तैसा अपना लेने में हानि नहीं है। हिंदी की असमर्थता दूर करने के लिए जो नए शब्द और वाक्यांश बनाए और अपनाए जाएं उनमें अधिकतम एकरूपता हो।

हिंदी को न्याय की भाषा बनाने के लिए हिंदी में विधानों और स्तरीय विधि साहित्य की रचना हो, मानक, प्रामाणिक और सर्वसम्मत विधि शब्दावली के बिना यह संभव नहीं है। देश की अदालते राजभाषा हिंदी में मुकदमों की सुनवाई करें और हिंदी में फैसले सुनाए, विधि एवं न्याय क्षेत्र में भाषाविदों और विधिवेत्ताओं के संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है।

''सभी सरकारी कार्यालयों में अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का उपयोग करने पर जोर दिया जाता है। वर्ष भर हिदी में अच्छे विकास कार्य करने वाले और अपने कार्य में हिंदी का अच्छी तरह से उपयोग करने वाले को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया जाता है।''

हिंदी के लिए पुरस्कार

दो सम्मान :

हिंदी दिवस पर हिंदी के प्रति लोगों को उत्साहित करने हेतु राजभाषा पुरस्कार दिया जाता है। यह पुरस्कार पहल राजनेताओं के नाम पर था, जिसे बाद में बदल कर 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और 'राजभाषा गौरव पुरस्कार' कर दिया गया ''राजभाषा गौरव पुरस्कार'' लोगों को दिया जाता है जबकि 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' किसी विभाग, समिति आदि को दिया जाता है।

1. राजभाषा गौरव पुरस्कार

यह पुरस्कार तकनीकी या विज्ञान के विषय पर लिखने वाले किसी भारतीय नागरिक को दिया जाता है। इसमें दस हजार से लेकर दो लाख रूपए के 13 पुरस्कार होते हैं। इसमें प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने वाले को 2 लाख रूपए, द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले को पचहत्तर हजार रूपए मिलते है। साथ ही दस लोगों को प्रोत्साहन पुरस्कार के रूप में दस–दस हजार रूपये प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कार प्राप्तकर्ता सभी लोगों को स्मृति चिन्ह भी प्रदान किया जाता है। इसका मूल उद्देश्य तकनीकी और विज्ञान के क्षेत्र में हिदी भाषा को आगे बढ़ाना है।

2. राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

इस पुरस्कार योजना के तहत कुल 39 पुरस्कार दिए जाते हैं। यह पुरस्कार किसी समिति, विभाग आदि को उसके द्वारा हिंदी में किए गए श्रेष्ठ कार्यो के लिए प्रदान किया जाता है। इसका मूल उद्देश्य सरकारी कार्यो में हिंदी भाषा के उपयोग को बढ़ावा देना है।

भारत जननी एक हृदय हो : इस वर्ष कोरोना संकट के कारण हिंदी दिवस पर औपचारिक कार्यक्रमों का स्वरूप बदल गया है लेकिन समाचार पत्रों तथा सोशल मीडिया पर प्रकाशित हो रहे लेख तथा टिप्पणियां बता रही है कि हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ी है। यह शुभ संकेत है कि समाज भाषा के प्रति सचेत हुआ है। सकारात्मक दृष्टिकोण सामने आ रहा है। हिंदी का विकास सत्ता के सहारे नहीं, जनमानस की स्वीकार्यता से होता रहा है और आगे भी इसी प्रक्रिया से होगा। हिंदी भाषियों पर यह दायित्व है कि भाषा को जीवन के हर क्षेत्र के लिए उपयोगी बनाते चलें। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में विस्तार की अनंत संभावनाए खुल रही है। हमें अपनी अस्मिता का बोध अंतस्थ कर राष्ट्र की एकात्मता के लिए निरंतर कार्य करते रहना है। 'भारत जननी एक हृदय हो' हमारा मंत्र है।

मन के डर से जीतो

हिरण के दौड़ने की गति
90 किमी प्रति घंटा होती है।
बाघ के दौड़ने की गती
60 किमी प्रति घंटा है।
फिर भी, बाघ हिरण का शिकार करता है।
यह उसकी गति और मनोबल को कम करता है
और उस बाघ का शिकार बन जाता है। यही सच कोरोना का है।
कोराना से कई गुना अधिक रोग प्रतिकार शक्ति हमारे पास है।
हमारा मनोबल और गति केवल भय के कारण कम हो जा रही है।
और हम बीमार हो जाते है।

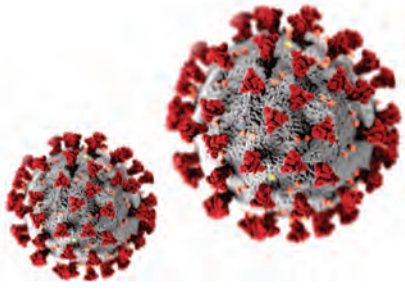

हिन्दी में काम करते समय ध्यान देने योग्य बातें

- हिन्दी पत्राचार के लिए आवक /जावक रजिस्टर बनाये तथा आवक/जावक पत्रों की प्रविष्टि करें।
- उचित राजभाषा कार्यान्वयन हेतु तिमाही प्रगति रिपोर्ट तिमाही समाप्ति के 10 के अन्दर भेजें।
- साइन बोर्ड पहले हिन्दी और बाद में अंग्रेजी होना चाहिए। सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के नामपट्ट द्विभाषी होने चाहिए।
- रबर की सभी मुहरें अनिवार्यतः द्विभाषी में ही बनवाएँ।
- कार्यालय द्वारा जारी किये गए परिपत्रों के लिए एक मास्टर फाइल रखें। सभी परिपत्र अनिवार्यतः द्विभाषी रूप में जारी करें।
- सभी फाइलों, रजिस्टरों, फोल्डरों आदि पर नाम विषय आदि हिन्दी में ही लिखे।
- हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में ही दें।
- सभी नोट टिप्पणी निर्णय दस्तावेज आदि द्विभाषी होना चाहिए
- उपस्थित पंजी में प्रतिदिन हिन्दी में हस्ताक्षर करें।
- सभी बोर्ड–जैसे की विभागों के नाम कार्यालय के निर्देश आदि द्विभाषी होने चाहिए।
- अवकाश के लिए आवेदन पत्र सभी प्रकार के अग्रिम, अवकाश यात्रा रिआयत आदि के पत्र हिन्दी में ही हों।
- पत्राचार चाहे किसी भी भाषा में क्यों न हो अपने हस्ताक्षर हिन्दी में ही करें।
- प्रत्येक तिमाही के दौरान कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक अवश्य आयोजित करें।
- राजभाषा से संबंधित नियम और अधिनियमों की जानकारी रखें।
- स्वयं हिन्दी में कार्य करें, साथ में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित करें।
- हिन्दी कार्यान्वयन समिति के सदस्यों की बैठक में हुई चर्चा एवं निर्णय से अपने विभाग के अधीनस्थ कर्मचारियों को अवगत करायें।
- सभी रबर की मोहरें द्विभाशी बनवाएँ।
- सभी नामपट्ट द्विभाषी हों।
- सभी पत्र शीर्ष द्विभाषी हों।
- सभी विजिटिंग कार्ड द्विभाषी मुद्रित करवाएँ।
- कंपनी के प्रचार हेतु दिए गए सभी विज्ञापन द्विभाषी/त्रिभाषी हों।
- सभी प्रेस विज्ञाप्तियां/टेंडर नोटिस द्विभाषी/त्रिभाषी हों।
- सभी फाइलों/फोल्डरों/रजिस्टरो के शीर्षक द्विभाषी हों।
- डाक लिफाफो पर पते हिन्दी में लिखे जाएं।
- राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) का शतप्रतिशत अनुपालन किया जाए।
- हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए जाए।
- कार्यालय में उपस्थित सभी कंम्प्यूटरो में यूनिकोड सक्रिय करें तथा कार्मिको को इसके प्रयोग हेतु प्रशिक्षण प्रदान करें।
- संबंधित नियंत्रक कार्यालय हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कार्मिकों को व्यक्तिशः आदेश जारी करें।
- प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन करें तथा कार्यवृत्त प्रेषित करें।
- हिन्दी में कार्य करने पर नकद प्रोत्साहन योजना की जानकारी सभी कर्मिकों को दें।
- आवक–जावक रजिस्टर (डाक रजिस्टर) हिन्दी में बनाया जाए।
- ईमेल हस्ताक्षर 100 प्रति. हिन्दी अथवा द्विभाषी हो।
- सभी कार्यालय/विभाग अपनी हिन्दी की तिमाही प्रगति रिपोर्ट अवश्य भेजें तथा क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा उसकी समीक्षा की जाए।
- हिन्दी कार्यसाधक ज्ञान रोस्टर समय–समय पर अद्यतन किया जाए।

पत्राचार में प्रायः प्रयोग आने वाले वाक्यांश

अंग्रेजी में	हिंदी में
May be Approved	अनुमोदित किया जाए
May be Filed	फाइल कर दिया जाए
May be perused	देख लिया जाए
Look into the matter	मामले को देखें
Necessary correction may be carried out	आवश्यक संशोधन कर लिया जाए
No action is necessary	कोई कार्रवाई अपेक्षित नही है
Permitted	अनुमति दी गई
Please expedite your reply	कृपया उत्तर शीघ्र भेजें
Proposal accepted	प्रस्ताव स्वीकार है
Speak Please	कृपया बात करें
Submitted for information	सूचनार्थ प्रस्तुत
Case is under consideration	मामला विचाराधीन है
Agenda will follow	कार्यसूची बाद में भेजी जाएगी
Brief note is placed Annexure	संक्षिप्त नोट अनुलग्नक है
Checked and found correct	जांच की और सही पाया
Do the needful	आवश्क कार्रवाई करें
Early action please	कृपया शीघ्र कार्रवाई करें
Eligibility is certified	पात्रता प्रमाणित की जाती है
Fix a date for meeting	बैठक के लिए कोई तारीख निश्चित की जाए
Follow up action should be taken soon	अनुवर्ती कार्रवाई शीघ्र की जाए
Give top priority to this work	इस काम को परम अग्रता दी जाए
I agree	मै सहमत हूँ
I disagree	मै असहमत हूँ
Information accordingly	तदनुसार सूचित करें
Issue today	आज ही जारी करें
Kindly look into it	कृपया इसे देख लें
Kindly Reply	कृपया उत्तर दें
Kindly Check	कृपया जांच कर लें
Acknowledgement awaited	पावती की प्रतीक्षा हैं
As early as possible	यथा शीघ्र
As for as possible	यथासंभव
Please follow the instructions	कृपया अनुदेशों का पालन करें
Copy enclosed for ready reference	तुरंत संदर्भ हेतु प्रतिलिपि संलग्न हैं
It has been decided that	यह निर्णय लिया गया है कि
It has been observed that	यह पाया गया है कि
Quarterly statement may be expedited	तिमाही विवरण तुरन्त भेजें
Suitable action may be taken	उचित कार्रवाई की जाए
From time to time	समय-समय पर
Kindly issue instructions	कृपया अनुदेश जारी करें

दैनिक प्रयोग के शब्द

Acceptance	स्वीकृति	Allowance	भत्ता
Action	कार्रवाई	Application	आवेदन
Additional	अतिरिक्त	Appointment	नियुक्ति
Ad-hoc	तदर्थ	Approval	अनुमोदन
Administration	प्रशासन	Arrears	बकाया
Admission	प्रवेश	Assets	संपत्ति
Agreement	करार	Deputation	प्रतिनियुक्ति
Full-time	पूर्णकालिक	Disciplinary	अनुशासनात्मक
Fund	निधि	Hereby	एतद्द्वारा
Growth rate	वृद्धि दर	Early	शीघ्र
Heir	वारिस	Hypothecation	गिरवी
Honorarium	मानदेय	Immediate	तत्काल
Verified	सत्यापित	Immovable	अचल
Voluntarily	स्वैच्छिक	In charge	प्रभारी
Wages	मजदूरी	Temporary	अस्थाई
		Unanimous	सर्वसम्मति

शुद्ध-अशुद्ध और विपरीत शब्द

शुद्ध और अशुद्ध शब्द

शुद्ध	अशुद्ध
भूख	भूक
धोका	धोका
मक्खी	मख्खी
झूठ	जूठ
पौधा	पौदा
धंधा	धंदा
भरत	भरथ
कल्याण	कल्यान
नारायण	नरायन
पुण्य	पुन्य
प्रणाली	प्रनाली
घबराना	घबडाना
आशीर्वाद	आर्शीवाद

शुद्ध	अशुद्ध
अतिथि	अतिथी
अभिमान	अभीमान
बलिदान	बलीदान
नीति	नीती
पुष्टि	पुष्टी
हानि	हानी
दीवाली	दिवाली
निरोग	नीरोग
अद्वितीय	अद्वितिय
बीमारी	बिमारी
आजीविका	आजीवका
कठिनाई	कठनाई
गृहिणी	गृहणी

विपरीत अर्थ वाले अनेक शब्द

अंतिम	प्रारंभिक
अन्दर	बाहर
अंधेरा	उजाला
अगला	पिछला
अच्छा	बुरा
अनजान	जानकार
अपमान	सम्मान
आगमन	प्रस्थान
आशा	निराशा
आसान	कठिन

इच्छा	अनिच्छा
उचित	अनुचित
उतार	चढाव
उदास	प्रसन्न
कठोर	नरम
चढना	उतरना
छोटा	बडा
झूठ	सच
ठंडा	गरम
पूर्ववर्ती	उत्तरवर्ती

राजभाषा विभाग : परिपत्र

डॉ सुमीत जेरथ, आई.ए.एस.
सचिव
Dr. SUMEET JERATH, I.A.S.
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय
GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
MINISTRY OF HOME AFFAIRS

अ.शा.प. सं. : 14011/01/2021-रा.भा. (नीति) दिनांक : 20 जनवरी, 2021

आदरणीय महोदय,

विषय : **राजकीय प्रयोजनों में राजभाषा - हिंदी के प्रचार-प्रसार बढ़ाने तथा विकास की गति को तीव्र करने संबंधी संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करने के संबंध में।**

राजभाषा संकल्प 1968 के अनुसार हमें हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति को और तीव्र करना है, एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार करके उसे कार्यान्वित करना है| जैसा कि सर्वविदित है कि हमारी राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सदभावना पर आधारित है। इस संदर्भ में और माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा **"स्मृति विज्ञान" (Mnemonics)** से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वयन के लिए **12 "प्र"** की रूपरेखा बनाई है जिसके स्तंभ हैं :

- **प्रेरणा** (Inspiration and Motivation)
- **प्रोत्साहन** (Encouragement)
- **प्रेम** (Love and affection)
- **प्राइज़ अर्थात पुरस्कार** (Rewards)
- **प्रशिक्षण** (Training)
- **प्रयोग** (Usage)
- **प्रचार** (Advocacy)
- **प्रसार** (Transmission)
- **प्रबंधन** (Administration and Management)
- **प्रमोशन** (पदोन्नति) (Promotion)
- **प्रतिबद्धता** (Commitment)
- **प्रयास** (Efforts)

तृतीय तल, एन.डी.सी.सी.-II भवन, जय सिंह रोड, नई दिल्ली-110001
फोन : (91) (11) 23438266, फैक्स : (91) (11) 23438267, ई-मेल : secy-ol@nic.in

राष्ट्रभाषा किसी व्यक्ति या प्रांत की सम्पत्ति नहीं है, इस पर सारे देश का अधिकार है। – सरदार वल्लभभाई पटेल

राजभाषा विभाग : परिपत्र

हिंदी के संवर्धन के लिए अंतिम दो "प्र" प्रतिबद्धता और प्रयास पर विशेष बल देने की महती आवश्यकता है।

2. संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करते हुए राजभाषा - हिंदी को और अधिक सरल, सहज, सुगम एवं सुबोध बनाने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय दृढ़ संकल्प और निरंतर प्रयासरत है। विभाग का मानना है कि राजकीय प्रयोजनों में हिंदी की गति को तीव्र करने के लिए यह एक **आवश्यक परिस्थिति (Necessary Condition)** है। इस दिशा में और गति देने के लिए मंत्रालय / विभाग / सरकारी उपक्रम / राष्ट्रीयकृत बैंक के शीर्ष नेतृत्व (माननीय मंत्री महोदय, सचिव, अध्यक्ष और महा प्रबंधक) की प्रतिबद्धता और प्रयास **पर्याप्त परिस्थिति (Sufficient Condition)** है।

3. अभी हाल में ही 02-05 नवम्बर 2020 को सम्पन्न केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति (COLIC) की बैठक में यह निष्कर्ष निकल कर आया कि यदि शीर्ष नेतृत्व हिंदी के प्रगामी / उत्तरोत्तर ही नही अपितु अधिकतम प्रयोग के लिए स्वयं मूल कार्य हिंदी में करे, जिसके लिए राजभाषा नियम, 1976 का नियम 12 भी इंगित करता है, इससे उनके उदाहरणमय नेतृत्व (Exemplary Leadership) से पूरे मंत्रालय / विभाग को प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलेगा| हिंदी के लिए एक अनुकूल और उत्साहवर्धक वातावरण बनाए और बीच-बीच में हिंदी के कार्यान्वयन की निगरानी (monitoring) करे, तब हिंदी की विकास यात्रा और तीव्र होगी। **हमारी संसदीय राजभाषा समिति ने भी हमें इस दिशा में उपयुक्त सुझाव और दिशा निर्देश देने के लिए कहा है।**

4. **उपरोक्त के आलोक में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय आपसे आग्रह करता है :**

(क) **हर माह में एक बार सचिव / अध्यक्ष अपनी अध्यक्षता में जब वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक करते हैं तब इसमें हिंदी में काम-काज की प्रगति और राजभाषा नियमों के कार्यान्वयन का मद भी अवश्य रखें और चर्चा करें|**

राजभाषा विभाग : परिपत्र

(ख) **अपने मंत्रालय/ विभाग/ संस्थान में अपने संयुक्त सचिव (प्रशासन)/ प्रशासनिक प्रमुख को ही हिंदी कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व दें और हर तिमाही में उनकी अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति (OLIC) की बैठक करें।**

5. प्रधानमंत्री जी के **"आत्मनिर्भर भारत" "स्थानीय के लिए मुखर हों" (Self Reliant India- Be vocal for local)** के अभियान को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत में सी-डेक, पुणे के सौजन्य से निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल **"कंठस्थ"** का विस्तार कर रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित हो। **यदि आप अपने विभाग / मंत्रालय में अपने अधिकारियों को "कंठस्थ" का प्रक्षिक्षण देने के लिए इच्छुक हैं तो हमें अपने तकनीकी दल द्वारा आपके यहाँ प्रशिक्षण कार्यक्रम / कार्यशाला आयोजित करने में अपार हर्ष होगा।**

जय राज भाषा ! जय हिंद !

शुभेच्छु,

सुमीत जैरथ

20/01/2024

(डॉ. सुमीत जैरथ)

भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों के सचिव एवं बैंकों/संस्थानों के अध्यक्ष

सब लोग अपनी–अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए हिंदी को साधारण भाषा के रूप में पढ़ें। – महर्षि अरविन्द

मेरा मन समझती है

दुख दर्द और एक-एक धड़कन समझती है
सिर्फ एक माँ है जो मेरा मन समझती है।

गूँगे हैं अल्फाज सारे सामने उस के
वो खामोशी की कसक तड़पन समझती है।

अब मैं बूढ़ा हो चला मगर ममता उसकी
मेरे अंदर का भोला बचपन समझती है।

उसकी आँखों में है अब भी मासूमियत वही
मैं हूँ बचपन मगर वो बचपन समझती है।

सब खजाने हैं फीके उस की निगाहों में
अपने बच्चों को वो अपना धन समझती है।

राजेश श्रीवास्तव
उप-निदेशक (रा.भा.)
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
नई दिल्ली-110001

दरिया की रवानी है

वक्त दरिया है दरिया की ये रवानी है।
लहर जो चल के आई कल चल के जानी है।

समय एक दिन औकात सबकी बता देगा,
कल बुढ़ापा है आज गर तू जवानी है।

बदलते हैं सिर्फ किरदार इस जीवन के
कल किसी की थी आज तेरी कहानी है।

आज मैं हूँ कल और कोई यहाँ होगा
हर किसी का हर जगह दाना पानी है।

बाद मेरे जाने के ये समझोगे तुम भी
न था पहले कोई न अब मेरा सानी है।

देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिंदी ही राष्ट्रभाषा-पद की अधिकारिणी है। – सुभाषचन्द्र बोस

दर्द गहरा होता है

जब दर्द कहीं कोई बेहद गहरा होता है
इन मुस्कानों पर भी उसका पहरा होता है।

बाँधों को तोड़े नदिया अक्सर बरसातों में
पर शांत है समंदर क्योंकि गहरा होता है।

चलना ही जीवन है, चलते जाना राही तुम
सड़ जाता है पानी वो जो ठहरा होता है।

दिन भर में जाने कितना बदले है आदमी
यूं कहने को तो बस एक ही चेहरा होता है।

सब रोशनियाँ भी तब फीकी फीकी लगती हैं
दिल के मंदिर में जब भी अन्धेरा होता है।

दर्द दिखलाता नही हूँ

बन गई है आदत ही ऐसी दर्द दिखलाता नहीं हूँ
मुहब्बत तो बहुत करता हूँ मैं, पर जताता नहीं हूँ।

कभी दिल पे लगे तो जी भरके रो लेना बेहतर है
छुपाने को दर्द अपना जबरन मुस्कुराता नहीं हूँ।

सुना है ये दर्द में दिल को बहुत चैन सुकून देती है
नशा तुझ-सा न हो बोतल में, तो मुँह लगाता नहीं हूँ।

सजाकर मैं रखूंगा पलकों पर तुझे जीवनभर मगर
गिराकर दूसरों को अगर गिरे मैं तब उठाता नहीं हूँ।

उपेंद्र पाण्डेय

युवा पीढ़ी के उभरते हुए कवि,
कई वर्षों से देश के
कई कवि मंचों पर ओजपूर्ण और
प्रभावशाली काव्य पाठ।
टी.वी. चैनलों एवं रेडिओ पर
रचनाएं प्रसारित।

पानी

यह सत्य कोई उपहास नहीं, सबको जीवन देता पानी..
जरा सुनें हम ध्यान लगाकर हमसे कुछ कहता पानी !

कितनी पथरीली राहों से चट्टानों से टकराती वह,
कुछ भूली भटकी रुकी नहीं अनजान दिशा से आती वह..
ऊँचे पहाड़ से उतर पड़ी जीवन की आस जगाने को..
निष्काम भाव से निकल पड़ी धरती की प्यास बुझाने को.
वह निर्मल जल बन कर सबको, शीतल करना चाहा..
लेकिन हम सबने शोषण कर, हर कदम उसे चलना चाहा..
घनघोर प्रदूषण की पीड़ा अब शहर शहर सहता पानी ।
जरा सुनें हम ध्यान लगाकर हमसे कुछ कहता पानी !

अब भी मैं वही कहता हूँ जो पहले कहता था कि हिंदी सबको सीखनी चाहिए। – चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

पानी तो केवल बहता है बस अँधा मूक–बधिर बनकर..
खेतों में बहे पसीना बन सरहद पर गर्म रुधिर बनकर..
वन में मृगतृष्णा सी होती बागों में लगती फुहार
सबको शीतल कर जाती बन बारिश पहली फुहार
आसमान से धरती पर जब बादल बरसता पानी,
नदीं पोखरी कुँओं में तालाब में लहराता पानी ।
मटमैला हो या गंदला हो, पानी से ही मिलता पानी ।
जरा सुनें हम ध्यान लगाकर हमसे कुछ कहता पानी !

पानी का कोई रूप रंग ना स्वाद गंध ये कैसा है ?
जैसे है मन की स्वच्छ भावना ये तो बिल्कुल वैसा है
स्वाद प्रतिष्ठा जैसी इसकी, गंध हवा सी आती है ।
रूप रंग है शिशु पर जैसे, माँ ममता बरसाती है ।
यह धवल चाँदनी में चमके जब लहरों पर बलखाती है ।
दर्पण में जैसे देख देख कर, कोई तरुणी ईठलाती है ।
शर्म हया बनकर नारी की, आँखों में रहता पानी ।
जरा सुनें हम ध्यान लगाकर हमसे कुछ कहता पानी !

योगी के है योग में पानी, भोगी के है भोग में पानी ।
जो स्वयं घटित हो जाता है, हर उस संयोग में है पानी ।
जेठ की धूप में है पानी, बादल के रूप में है पानी ।
पाताल तलक जो जाती है, उस अंधकूप में है पानी
हर धर्म जात में है पानी, लोगों की बात में है पानी
धरती को हरा भरा करती, पेड़ों के पात में है पानी
वह समदर्शी ईश्वर सा बन, हम सबको जीवन देता पानी ।
जरा सुनें हम ध्यान लगाकर हमसे कुछ कहता पानी !

युगों युगों से इस धरती पर, जल पर सबका अधिकार रहा ।
प्राणदायिनी माँ गंगा का इसलिये सदा सत्कार रहा ।
स्वार्थ भाव में अंधे होकर, पानी को हम बांट रहे ।
धरती की जो श्वांस नली है, अनजाने में काट रहे।
अधिकार जताने की खातिर, हमने नदियों को छाँट दिया ।
आने वाला युग भोगेगा, हमने जो अपराध किया ।
बोतल में अब कैद हो गया, झरने से झरता पानी ।
जरा सुनें हम ध्यान लगाकर हमसे कुछ कहता पानी !

कभी ठंड में ठिठुर कर देख लेना
कभी तपती धूप में जल के देख लेना
कैसे होती है सुरक्षा देश की
कभी सीमा पर चल के देख लेना

शब्दों का संसार

श्री. पी. के. मिश्रा
उपमहाप्रबंधक (रसायन)
मुख्यालय, नागपुर

हम अपनी भावनाएं अपने विचार शब्दों के द्वारा व्यक्त करते है, इसलिए शब्द रचे जाते हैं, शब्द गढ़े जाते है,
शब्द मढ़े जाते है,शब्द लिखे जाते है, शब्द पढ़े जाते है,
शब्द बोले जाते है,शब्द तौले जाते है, शब्द टटोले जाते है ,
शब्द खंगोले जाते है,

अंततः

शब्द बनते है, शब्द संवरते है, शब्द सुधरते है ,
शब्द निखरते है, शब्द हँसते है, शब्द मनाते है ,
शब्द रूलाते है, शब्द मुस्कुराते है, शब्द खिलखिलाते है,
शब्द गुदगुदाते है, शब्द मुखर जाते है,
शब्द मधुर हो जाते है ,

फिर भी

शब्द चुभते है, शब्द बिकते है , शब्द रूठते है,
शब्द घाव देते है, शब्द ताव देते है, शब्द लड़ते है,
शब्द झगड़ते है, शब्द बिगड़ते है, शब्द विखरते है,
शब्द सिहरते है, शब्द संवरते है , शब्द हँसते है

किंतु

शब्द मरते नहीं है, शब्द थकते नहीं है,
शब्द रूकते नहीं, शब्द चुकते नहीं

अतएव

शब्दों से खेले नहीं, बिन सोचे बोले नहीं,
शब्दों को मान दे, शब्दों को सम्मान दें,
शब्दों पर ध्यान दें, शब्दों को पहचान दें,
ऊंची लम्बी उड़ान दें, शब्दो को आत्मसात करें
उनसे उनकी बात करें, शब्दों का आविष्कार करें
ध्यान से सुने, गहन सार्थक विचार करें,
व ध्यान से समझे फिर उत्तर दें,

क्योंकि

शब्द अनमोल है, जुबा से निकले बोल है ,
शब्दों में धार होती है,
शब्दों की महिमा अपार होती है,
शब्दों का विशाल भंडार होता है ,

अगर न होते ये शब्द

दुनिया कितनी खामोश होती,
हम क्या करते हम क्या समझते
हम क्या लिखते हम क्या कहते,
जिंदगी यूं ही गुजर जाती
मन की समझ के सहारे,

इसलिए

सच तो यह है कि
शब्दों का अपना एक संसार होता है।

राज्य का सब काम अंग्रेजी में चलाना जनता पर एक बोझ लादना है। – काका कालेलकर

नई उम्मीद

डॉ. विजय संजय नरवाड़े
मुख्य प्रबंधक (चिकित्सा सेवाए)
चिखला खान

हे इन्सान, मास्क पहनने के लिए संकोच न कर,
साथ में, सैनिटायझर एवं दो गज दूरी का पालन कर।

मास्क सैनिटायझर और दूरी, है एक सबुरी,
इनको कोई न समझे हमारी कमजोरी।

वर्तमान स्थिति ले रही है हमारी परीक्षा,
खुद सुरक्षित रहकर, करनी है सबकी रक्षा।

पशु, पंछियों को चाहिए खुला आसमान और वन,
तू मानव होकर भी इतना नासमझ मत बन।

यह वक्त भी जरूर पलट जायेगा,
खुशहलियों का माहौल लौट आयेगा।

आज कल बनकर बीत जायेगा,
नया कल उम्मीद लेकर फिर आयेगा।

परिवर्तन तो निसर्ग नियम था, है और रहेगा,
खुद को न ढाल पाये तो पीड़ित हो जायेगा।

सब मिलकर इस घड़ी को आसान बनाना है ,
अब तो हमें कोरोना को हराना है।

अंग्रजी यहां दासी या अतिथि के रूप में ही रह सकती है, बहूरानी के रूप में नहीं। कामिल बुल्के

कोरोना

गौसिया शफ़क़ खान

कितने खौफनाक मंजर हैं यहाँ तबाही के
घुटने टूटे सुपरषक्ति की तानाषाही के
कितने खौफ़नाक मंज़र हैं यहाँ तबाही के।

फँसी हुई दुनिया कैसे अपने ही पाँसों में
एक वायरस टहल रहा आदमी की साँसों में
अवरोधक लग गएपाँव में आवाजाही के.........
कितने खौफ़नाक मंज़र हैं यहाँ तबाही के...।

सुनते हैं यमराज कहाँ कब कोई भी बिनती
रोज यहाँ गिरती लाषों की कौन करे गिनती
दिखते हैं ताबूत अनगिनत यहाँ उगाही के......
कितने खौफ़नाक मंज़र हैं यहाँ तबाही के...।

कहाँ गया ईश्वर बहुव्यापी जग का विषपाई
एक वायरस ने दुनिया को किया धराषायी
कुछ दिन में तो लोग मिलेंगे नहीं गवाही के...
कितने खौफ़नाक मंज़र हैं यहाँ तबाही के...।

वल्गाएं थम गयी प्रगति की संध्या वेला है
यह दुनिया लगती जैसे दो दिन का मेला है
कहाँ गए वो दिन पहले–से सरितप्रवाही के.....
कितने खौफ़नाक मंज़र हैं यहाँ तबाही के...।

रेलें ठप, ठप हुई हवाई सारी यात्राएं
घर में कैद सुनाएं कैसे अपनी पीड़ाएं
तेल कान में डाल सो रही नौकरषाही के,
कितने खौफ़नाक मंज़र हैं यहाँ तबाही के...।

हिन्दी जानने वाला व्यक्ति देश के किसी कोने मे जाकर अपना काम चला लेता है – देवव्रत शास्त्री

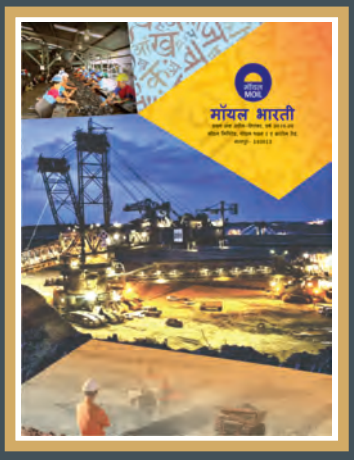

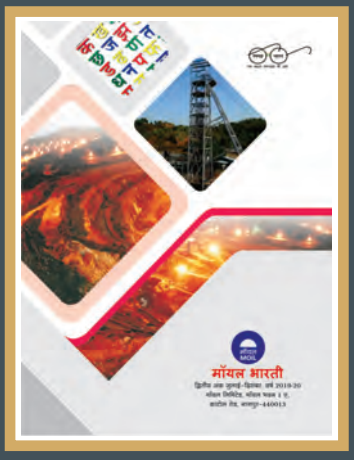

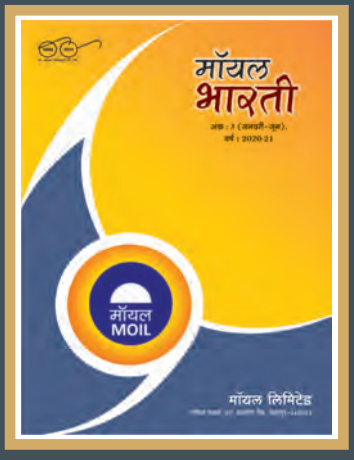

मॉयल भारती
अब ऑनलाइन उपलब्ध है।

मॉयल लिमिटेड का राजभाषा अनुभाग राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु प्रत्येक छमाही में, हिंदी गृह पत्रिका 'मॉयल भारती' का प्रकाशन करता है। अब तक इस छमाही पत्रिका के 04 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इस प्रकाशन के माध्यम से राजभाषा अनुभाग का यह प्रयास रहता है कि कर्मचारियों और अधिकारियों में राजभाषा के प्रति उत्साह और ज्ञान का विकास हो सके। पत्रिका में राजभाषा संबंधी जानकारी के अलावा सरकारी कामकाज में प्रयोग होने वाले शब्दों, वाक्यांशों एवं अद्यतन नियमों की जानकारी उपलब्ध कराई जाती है ताकि कार्मिकों के दैनिक कामकाज में यह सहयोगी बन सके। साथ ही कर्मचारियों की अभिव्यक्ति को सबल बनाने के लिए भी साहित्यिक सामग्री एवं नवलेखन पर भी ध्यान दिया जाता है। इससे कर्मचारियों में उत्साह तो बढ़ता ही है, राजभाषा के प्रति लगाव ही बढ़ जाता है।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के दिनांक के आदेश के अनुसार केंद्र सरकार के सभी विभागों को यह निर्देश दिए गए हैं कि उनके कार्यालय से प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिकाओं को अनिवार्य रूप से डिजिटल फॉर्म में भी प्रकाशित किया जाए। साथ ही उसे राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर अपलोड किया जाना भी सुनिश्चित किया जाए। इससे कार्यालय की गृह पत्रिकाएं अधिक से अधिक लोगों तक डिजीटल फॉर्म में पहुँच सकेंगी और इससे कागजी बचत होने के साथ–साथ विलंब और अन्य खर्चों से भी बचा जा सकेगा।

राजभाषा विभाग के उपर्युक्त आदेश के अनुपालन में, मॉयल लिमिटेड ने इस सुझाव को अपनाते हुए गृह पत्रिका 'मॉयल भारती' के अंकों को ऑनलाइन करना शुरू कर दिया है। यह सुखद आश्चर्य है कि नागपुर स्थित कार्यालयों में 'मॉयल लिमिटेड' पत्रिका ऑनलाइन करने में सबसे आगे रहा है। इस सफलता से अब पाठकगण इस पत्रिका को राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर जाकर डिजिटल फॉर्म पढ़ सकते हैं। इससे पत्रिका का रूप भी निखर रहा है और साथ ही प्रबुद्धजनों की प्रतिक्रिया से पत्रिका की सामग्री भी गुणवत्तापूर्ण बन रही है।

मॉयल भारती के डिजिटल अंक को पढ़ने के लिए आप निम्नलिखित लिंक http://moil.nic.in/userfiles/Moil_Bharti_pdf पर या राजभाषा विभाग की वेबसाइट डब्ल्यूडब्ल्यूडब्लयू(डॉट)राजभाषा(डॉट)जीओवी(डॉट)इन पर जाकर पत्रिका को पढ़ने का आनंद उठा सकते हैं।

सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई सामान्य लिपि हो सकती है तो वह देवनागरी है। – गोविन्द मेनन

अमित कुमार सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक, तिरोडी खान

जलवायु परिवर्तन और टिकाऊ विकास

ग़रीब जिस तरह से जीवन जी रहा है इसमें जल, जमीन सबके टिकाऊ रहने की बात होती है। टिकाऊ विकास के संदर्भ में विश्व स्तर पर जो बहस और बात चल रही है उसके संदर्भ और मायने सबके लिए अलग–अलग हैं।

जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर वर्तमान सरकार द्वारा जो बाते कही जा रही है कि पर्यावरण विनाश की जिम्मेदारी विकसित देशों पर अधिक बीच में हमारी सरकार यह स्वीकार शुरु कर लग गयी विकासित देशों पर अधिक है। लेकिन बीच में हमारी सरकार यह स्वीकारना शुरु कर दिया कि हम उत्सर्जन में 20–25 प्रतिशत की कमी कर देगें यह नयी बात छेड दी गयी विकसित देश में फर्क है और निश्चित ही ज्यादा जिम्मेदारी विकसित देशों की है लेकिन यही बात देश के अंदर लागू की जाए तो यहां भी कुछ लोग विकसित है और कुछ लोग विकासशील है और कुछ लोग अविकसित भी है।

हमारे देश औसत कार्बन फुटप्रिंट दुनिया के अन्य देशों के मुकाबले काफी कम है। भारत में प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन कम है लेकिन देश के अंदर जो लोग विकसित है उनकी ऊर्जा–खपत और कार्बन उत्सर्जन में भागीदारी विकसित देशों के समृद्व लोगों के बराबर ही है। अमीरों के रहन–सहन, चाल–चलन का हिसाब निकालें तो वह दुनिया के अन्य समृद्ध लोगों के बराबर हैं। ऐसे में देश के भीतर भी विकसित लोगों को अपनी जिम्मेदारी का एहसास होना चाहिए। जब सरकार कहती है कि हम उत्सर्जन में कटौती करेंगें तो यह दबाव अमीर पर लगना चाहिए, अगर वे 80 प्रतिशत घटायेंगे तो भी देश का औसत 20 प्रतिशत बैठेगा, मध्यम वर्ग और कम आय वर्ग पर अधिक जोर नहीं डालना चाहिए, गरीबों को सचेत करना तो ठीक है, जिनके पास एक से अधिक गाडियाँ हैं ही नहीं बल्कि गाड़ियों का काफिला होता है इसलिए गाडियों को रखने की एक सीमा तय होनी चाहिए, इससे ऊर्जा की खपत में कमी आयेगी।

कार्बन उत्सर्जन में कटौती और विकसित देशों की अधिक जिम्मेदारी तय करने के बारे में केंद्रीय पर्यावरण मंत्री श्री प्रकाश जावडेकर का तर्क बहुत सराहनीय है, भारत लंबे अरसे से यह बात दोहराता आया है। एक तर्क दिया जाता है कि जलवायु परिवर्तन का दुष्प्रभाव कम आय वाले देशों पर अधिक होगा, सच्चाई तो यह है कि जलवायु परिवर्तन के असर से कोई अछूता नही रहेगा, मान लें, अगर समुद्र तट बढ जाता है, तो वहाँ के टूरिस्ट–होटल भी प्रभावित होगें, जलवायु परिवर्तन से सबसे गरीब सबसे ज्यादा प्रभावित होगें, इसमें सच्चाई नहीं है और यह तर्क विकसित देशों पर कभी अंकुश नहीं लगाते है, अगर पेट्रोल खत्म हो गया, तो सबसे अधिक असर गाड़ी पर होगा, न कि साइकिल पर चलने वाले पर।

मेरा मानना है कि अगर आपको प्रकृति के अनुसार चलना है, तो आपको गरीबों से सीखना चाहिए कि वे

कैसे प्रकृति के साथ तालमेल बिठा कर चलते हैं अगर आप अपनी जीवनशैली और समझ उनके बराबर करेंगें तभी यह पृथ्वीं बच पायेगी, अन्यथा हम अपने विनाष के लिए आगे बढ रहे है,हम मानने को तैयार नही है कि हमें अपनी जिम्मेदारी लेती है, यही कुतकंवैश्विक स्तर पर देखा जा रहा है हर कोई दूसरों पर जिम्मेदारी टालने की बात कह रहा है, विकसिमत देश परमाणु समझौते शस्त्र समझौतों आदि में भी यही बात बार–बार करते है, वे अपनी जिम्मेदारी लेने की वजाय दूसरों सें पहले शुरूआत करने की शर्त रखते है, वैश्विक स्तर पर ये उत्सर्जन का औसत पूरे देश का होता है, यानि जब पूरी आबादी के हिसाब से कोटा निकाला जाता है, तो चीन दूसरे और भारत पांचवें स्थान पर आ जाता है,अमेरिका पहले स्थान पर है, इसका मतलब है कि जो जितना बडा देश है, उतना कोटाराय होंगा, यह बिल्कुल उसी तरह हुआ कि एक बस में 40 लोग यात्रा कर रहे है, और दूसरी गाड़ी में कोई अकेले यात्रा कर रहा है, तो कोटा बस का ज्यादा हो जाता है, लेकिन सवाल है कि कितना पेट्रोल और डीजल जला कर 40 लोग सफर कर रहा है,जब तक प्रति व्यक्ति खपत की बात नहीं की जायंगी तब तक यह बात स्पष्ट नहीं होगीं जब बात स्पष्ट होगी, तो चीन दूसरे और भारत पांचवें नंबर नही रहेंगी, इस प्रकार 150 देशों में भारत 60–62 वें स्थान पर पहुँच जायेगा. इसलिए प्रति व्यक्ति की बात जानबूझ कर नही की जाती है, टिकाऊ विकास की बात बार–बार कही जाती है। इसके दो मायने हो सकते है पहला कि आप इस तरह से विकास करें कि पृथ्वी टिकी रहे, दूसरा अर्थ होता है जिस तरह से विकास कर रहें हैं, वह टिकाऊ है और पृथ्वी उसका बोझ लेती रहे, तो उसका विकास चलेगा। ये दोनों अलग–अलग सोचने के तरीकें हैं, अमीर जब टिकाऊ विकास की बात करता हैं, तो उसका सोचने का तरीका अलग होता हैं, लेकिन जब गरीब कहता हैं कि मैं जिस नजरिये से देख रहा हूं वह टिकाऊ है,वह प्रकृति के बारे मैं जिस नजरिये से देख रहा हूं वह टिकाऊ है, तो वह प्रकृति के बारे में सोचते हुए कह रहा होता है, गरीब जिस तरह से जीवन जीता है, इसमें जल,जंगल, जमीन सबके टिकाउ रहने की होती है, टिकाऊ विकास के संदर्भ में विश्व स्तर पर जो बहस और बात चल रही है, उसके संदर्भ और मायने सबके लिए अलग–अलग है हर चीज को प्रभावी बनाने की बात करते समय हम यह भूल जाते हैं कि प्रकृति कितना सह सकती हैं।

'बेहद कड़वी सच्चाई'

शहर कलकत्ता में बसे हावड़ा में एक बड़े अफसर रहने के लिए आए, जो हाल ही में सेवानिवृत्त हुए थे। ये बड़े वाले रिटायर्ड अफसर, हैरान परेशान से, रोज शाम को पास के पार्क में टहलते हुए, अन्य लोगों को तिरस्कार भरी नजरों से देखते और किसी से भी बात नहीं करते थे।

एक दिन एक बुजुर्ग के पास शाम को गुफ्तगू के लिए बैठे और फिर लगातार बैठने लगे। उनकी वार्ता का विषय एक ही होता था – मैं इतना बड़ा अफसर था कि पूछो मत, यहां तो मैं मजबूरी में आ गया हूं, मुझे तो दिल्ली में बसना चाहिए था। और वो बुजुर्ग शांतिपूर्वक उनकी बातें सुना करते थे। एक दिन जब सेवानिवृत्त अफसर की आंखों में कुछ प्रश्न, कुछ जिज्ञासा दिखी, तो बुजुर्ग ने ज्ञान दे ही डाला...

उन्होंने समझाया – 'आपने कभी फ्यूज बल्ब देखे हैं?'

बल्ब के फ्यूज हो जाने के बाद क्या कोई देखता है कि बल्ब किस कम्पनी का बना हुआ था, कितने वाट का था, उससे कितनी रोशनी या जगमगाहट होती थी? बल्ब के फ्यूज होने के बाद इनमें से कोई भी बात बिलकुल ही मायने नहीं रखती। लोग ऐसे बल्ब को कबाड़ में डाल देते हैं। है कि नहीं ?

जब उन रिटायर्ड अधिकारी महोदय ने सहमति में सिर हिलाया, तो बुजुर्ग बोले – रिटायरमेंट के बाद हम सब की स्थिति भी फ्यूज बल्ब जैसी हो जाती है। हम कहां काम करते थे, कितने बड़े छोटे पद पर थे, हमारा क्या रुतबा था, यह सब कुछ भी कोई मायने नहीं रखता।

(शेष पृष्ठ 49 पर)

मॉयल में नवीनीकरणीय ऊर्जा का प्रचलन

मॉयल लिमिटेड, इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में एक सूचीबद्ध अनुसूची 'A' मिनीरत्न श्रेणी–I केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है। मॉयल लिमिटेड भारत में मैंगनीज अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक है। यह कंपनी इलेक्ट्रोकलिटिक मैंगनीज डायऑक्साईड (ईएमडी) और फैरो मैंगनीज का भी उत्पादन करती है जो कि एक उच्च मूल्य उत्पाद है तथा जिसका प्रयोग शुष्क बैटरी, फार्मास्यूटिकल्स और पेंट उद्योग, इस्पात निर्माण इत्यादि में किया जाता है। 31 मार्च, 2020 को कंपनी की अधिकतम पूँजी 300 करोड रूपये तथा प्रदत्त पूँजी 237. 33 करोड थी। कंपनी में, भारत सरकार और दो राज्य सरकारों यथा महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश की शेयरधारिता है। कंपनी में विभिन्न शेयरधारिता का विवरण निम्नलिखित है–

क्रम	शेयरधारकों की विभिन्न श्रेणी	कुल शेयर होल्डींग का प्रतिशत*
1	भारत सरकार	53.84
2	महाराष्ट्र सरकार	5.11
3	मध्य प्रदेश सरकार	5.40
4	जनता	35.65
आँकडे मॉयल लिमिटेड की वार्षिक रिपोर्ट 2019–2020 के आधार पर आकलित हैं।		

सर्वोच्च लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए मॉयल लिमिटेड ने खनन कार्य के साथ ही पर्यावरण का भी पूरा ख्याल रखा है। इसलिए परम्परागत ऊर्जा स्रोतों से हटकर नवीकरणीय स्रोतों की ओर कदम बढ़ाये गये हैं। इस प्रयास से मॉयल लिमिटेड को न केवल फायदा होगा बल्कि हमारी सामाजिक उत्तरदायित्व भी प्रमुखता से प्रकट होगा। इन प्रयासों की एक झलक प्रस्तुत है।

गैर–पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देना

मॉयल ने अपने कॉर्पोरेट हेड क्वार्टर, मॉयल भवन, नागपुर में नेट–मीटरिंग के साथ 48 किलोवाट क्षमता वाली ग्रिड कनेक्टेड रूफ टॉप पीवी सोलर सिस्टम परियोजना स्थापित किया है। बिजली बिलों में रु 10.00 लाख/प्रति वर्ष बचत अनुमानित हैं। यह नेट–मीटरिंग सुविधा के साथ विदर्भ में पहला ग्रिड कनेक्टेड रूफ टॉप सोलर सिस्टम है।

मॉयल ने हाल ही में महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में स्थित खदान क्षेत्र में ग्रिड से जुडे 10.50 मेगावाट क्षमता का पीवी सौर सिस्टम लगाया है जिसमें बिजली बिलों में रु 5.50 करोड प्रति वर्ष बचत अनुमानित हैं।

अंग्रेजी सदैव के लिए शिक्षा का माध्यम नहीं रह सकती। – डॉ. जाकिर हुसैन

मॉयल ने पहले ही मध्य प्रदेश के देवास में 20 मेगावाट पवन ऊर्जा सयंत्र में 100 करोड़ निवेश किए हैं।

इन सबके अलावा मध्य प्रदेश में, निवेश के एक हिस्से के रूप में सौर ऊर्जा परियोजना हैं, मॉयल ने दो अलग–अलग परियोजनाएं शुरू की हैं, यानी एक सौर ऊर्जा परियोजनाएं 5.5 मेगावाट और दूसरी 20 मेगावाट की। इन सौर परियोजनाओं का विवरण निम्नलिखित है :

खनन क्षेत्र के भीतर सौर ऊर्जा परियोजना

मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले की विभिन्न खानों में 5.5 मेगावाट की सौर ऊर्जा परियोजना(एसपीपी), नीचे दिए गए विवरण के अनुसार लगभग पूरी हो चुकी है:–

आंतरिक उपयोग(कैपटिव यूज) के लिए माह अक्टूबर, 2018 से बालाघाट खदान में 0.965 मेगावाट के एसपीपी से शुद्ध मापन की व्यवस्था के साथ ऊर्जा उत्पादन शुरू हो गया है।

उकवा और बालाघाट खानों के आंतरिक उपयोग(कैपटिव यूज) के लिए, उकवा खदान में 1.965 मेगावाट के सौर ऊर्जा संयंत्र से ऊर्जा उत्पादन, माह अप्रैल, 2019 से शुरू हो गया है।

बालाघाट के फेरो मैंगनीज प्लांट के आंतरिक उपयोग(कैपटिव यूज) के लिए, तिरोड़ी खदान में 2.57 मेगावाट (0.63 मेगावाट व 1.94 मेगावाट) के एसपीपी से ऊर्जा उत्पादन माह अप्रैल, 2019 से शुरू हो गया है।

ट्रैकिंग सिस्टम के साथ 0.965 मेगावाट व 0.6.3 मेगावाट के सौर ऊर्जा संयंत्र सक्रिय हैं जबकि 1.965 मेगावाट और 1.94 मेगावाट के सौर ऊर्जा संयंत्र ट्रैकिंग प्रणाली के संचालित हैं।

परियोजना की कुल लागत 33.75 करोड़ है, जिसमें से 30.00 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं।

खनन क्षेत्र के बाहर सौर ऊर्जा परियोजना

मध्य प्रदेश में, मॉयल के 20 मेगावाट एसपीपी के लिए, भोपाल के नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा विभाग(एनआरईडी) ने जिला राजगढ़(एमपी) के राजगढ़खास में सरकारी–भूमि को आवंटित किया था। हालांकि, आवंटित सरकारी–भूमि पर, 20 मेगावाट क्षमता के स्थान पर केवल 13 मेगावाट(एसी) सौर पीवी बिजली परियोजना उपयुक्त थी। दिनांक 23–06–2017 को एनआरईडी द्वारा अतिरिक्त भूमि आवंटित की गई थी। परियोजना के लिए आवंटित कुल भूमि 49.67 हेक्टेयर है और सौर बिजली परियोजना की कुल लागत 110.64 करोड़ रुपये है।

दिनांक 9.2.2018 को कंपनी बोर्ड द्वारा 20 मेगावाट(एसी) सोलर पीवी बिजली परियोजना की स्थापना के प्रस्ताव को मंजूरी मिलने के बाद, एमपी डिस्कॉम द्वारा सूचित किया गया कि प्रस्तावित 20 मेगावाट सोलर बिजली परियोजना 132 किलोवाट के हाईटेंशन कनेक्शन के लिए ही उपयुक्त है।

तदनुसार, मॉयल ने 132 केवी के नए कनेक्शन के लिए आवेदन किया है। व्यवहार्यता अध्ययन प्राप्त होने पर, जमा आधार पर एमपीपीटीसीएल (मध्य प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी लिमिटेड) को 132 केवीए केवी ट्रांसमिशन लाइन के निर्माण का कार्य प्रदान किया गया है। मॉयल ने संबद्ध सबस्टेशन के लिए निविदा प्रक्रिया भी शुरू की है। 132 केवी हाईटेंशन बिजली लाइन के लिए निर्माण की कुल लागत 40.15 करोड़ रुपये है।

ऐसा अनुमान है कि सबस्टेशन के साथ 132 केवी लाइन का काम अगस्त, 2022 तक पूरा हो जाएगा।

मॉयल लिमिटेड नये विचारों और नवाचारों में विश्वास रखता है और शोध व अनुसंधान की रीति–नीति का पालन करते हुए कंपनी को नित नयी ऊँचाईयों पर ले जाने के लिए उद्यत रहता है।

इस विशाल प्रदेश के हर भाग मे शिक्षित अशिक्षित ,नागरिक और ग्रामीण सभी हिन्दी को समझते है – राहुल सांक्रत्यायन

कदम मिलाते चलो

इम्मानुएल 'दीप'
उकवा खान

ये सफर है जिन्दगी का मुस्कुराते चलो,
दिल से सबको अपना बनाते चलो।।

अभी वक्त नही है रूठने मनाने का,
बस एक दूजे का साथ निभाते चलो।।

कभी न कभी तो अच्छा वक्त आयेगा,
अपने दिल को यही समझाते चलो।।

वक्त तो कभी, कहीं ठहरता ही नही ,
ये वक्त भी गुजर जायेगा, बताते चलो।।

न रहे दिल में मलाल किसी बात का,
गलत बातों को दिल से भुलाते चलो।।

हम सुधरेंगें तभी ये जग भी सुधरेगा,
स्वंय अपनी जिम्मेदारी निभाते चलो।।

गलत करना न गलत का साथ देना कभी,
तउम्र सच्चाई का साथ निभाते चलो।।

ये सफर है जिंदगी का, हँसते हँसाते चलो,
जिंदगी में खुशियों के 'दीप' जलाते चलो।।

याद करेगा जमाना, कदम मिलाते चलो,
जंग जीतेंगें, एक दूजे का
हौसला बढाते चलो।।

शिक्षा के प्रसार के लिए नागरी लिपि का सर्वत्र प्रचार आवश्यक है – शिवप्रसाद सितोरहिंद

मदर्स डे

(लघु कथा)

दिनेश कनोजे 'देहाती'
चार्जहैंड मेकेनिकल
तिरोड़ी खान

बूढ़ी महिला –
मैनेजर साहब,
ये मदर्स डे
कब आएगा ?

मैनेजर –
माता जी!
वह तो चला गया,
तुम क्यों पूछ रही हो ?

बूढ़ी महिला –
इस दिन मेरा बेटा
मुझसे मिलने यहां
वृद्धाश्रम में आता था
और फोटू भी लेता था
मुझे अच्छा लगता था
तब से मुझे अच्छा लगता था
मदर्स डे।

मैनेजर –
ओह गॉड,
माताजी लेकिन
इस साल लॉकडाऊन हैं ना
इसलिए नहीं आया होगा।

बूढ़ी महिला –
क्या मैनेजर साहब
यह लॉकडाऊन
बेटे को माँ से भी
मिलने नहीं देता।

ठहर जायेगा

दिनेश कनोजे 'देहाती'
चार्जहैंड मेकेनिकल
तिरोड़ी खान

सारी दुनिया एक अंजाने भय से ग्रस्त है।
तिनका ताड़ राई पहाड़ सब के सब पस्त है।
चूलें हिल गई दुनिया के बादशाह की भी,
दिखता नहीं है मगर दुश्मन जबरदस्त है।

ठहरी हुई है जिंदगी मगर रुकी नहीं है,
चल रहें हैं मंजिल मिलेगी यकीं नहीं है,
अंधेरा, रात का कम बातों का ज्यादा है ,
अफवाहों का आकाश और जमीं नहीं है।

सतर्क रहो बेवजह मत निकलो घर से,
खबरें खतरनाक आ रही गांव से शहर से।
लौटा कोई खाली हाथ कोई उम्मीद लेकर,
जिंदगी दांव पर लगा दी मौत के डर से।

समय ठहरता नहीं यह वक्त गुजर जायेगा,
टूटा हुआ आशाओं का घर सँवर जायेगा।
सावधानी, संयम और सहयोग देते रहे हम,
कोरोना वायरस का तांडव ठहर जायेगा।

नमन हैं तुम्हें, हे! कोरोना के योद्धा सिपाही,
जीवन देने दूसरों को अपनी जान गँवाई।
आभार व्यक्त करते हैं अभिनंदन करते हैं,
आप ही के कारण हम ने भी हिम्मत जुटाई।

जो-जो जब होना है वो-वो तब होता है,
आज तो अपना है पगले तू क्यों रोता है,
नजर उठाकर देख ये वही दुनियां है 'देहाती',
जहाँ ईसा अपना सलीब खुद ही ढ़ोता है।

के.के. नितनवरे
कार्यपालक निजी सचिव
(कार्मिक विभाग)

पल्लेदार

गेहू, चावल की चार बोरियों को दुकान से उठाकर 50 मीटर दूर कार में रखवाने के लिए वे पल्लेदार से बहस कर रहे थे –

''हद है भाई लूट की... चार बोरियों की लोडिंग करने का 40 रूपया अंधेर मचा रखी है इन लोगो ने तो... चलो हटो, रहने दो। मैं खुद ही उठाकर कार में रख लूंगा।''

उन्होंने गुस्से में एक बोरी उठाई लेकिन कार तक पहुंचने से पहले ही लड़खड़ा कर बोरी सहित उलट गए।

'' हाय राम ! कमर तो टूट गई मेरी।''

इतने में पल्लेदार दौड़कर आया और उन्हें उठाकर कार में बैठाते हुए बोला ''आप रहने दीजिए सर, मैं बोरियों को रख देता हूँ।''

पल्लेदार ने देखते ही देखते चारों बोरियां उठाकर कार की डिक्की में रख दी और उनको नमस्कार करके जाने लगा तो उन्होंने उसे बुलाकर उसके हाथ में 50 रूपये का नोट रख दिया।

पल्लेदार जब उन्हे 20 रूपये वापस करने लगा तो उन्होंने आष्चर्य से कहा––

''अरे भाई पूरे पैसे रख लो, वैसे भी तुम्हारी मेहनत के 40 रूपये तो हो ही रहे है, फिर तुमने मुझे गिर जाने पर जमीन से उठाया भी तो है।''

पल्लेदार मुस्कुराते हुए बोला ''नहीं सर, मैंने तीन बोरी ही आपकी कार में लोड की है। एक बोरी तो आप खुद कार के पास तक लेकर पहुँच ही गए थे और हम लोग किसी के गिर जाने पर उसको उठाने का रूपया नहीं लेते सर।''

कहकर पल्लेदार वापस अपने स्थान की ओर लौट गया और वे पल्लेदार की गंदी पीठ देखते रहे।

भाषा और राष्ट्र मे बड़ा घनिष्ठ संबंध है – राधिकारमण प्रसाद सिंह

मैं मकान लेकर कही जाऊँगा थोड़े ही

पूजा वर्मा
राजभाषा अधिकारी

'मैं कल अपनी पुरानी सोसाइटी, जहां पहले मैं रहता था, वहा गया था। वहां मैं जब भी जाता हूं, मेरी कोशिश होती है कि अधिक से अधिक लोगों से मेल मुलाकात हो जाए।'

'जब अपनी पुरानी सोसाइटी में पहुंच कर गार्ड से बात कर रहा था कि तभी मोटरसाइकिल पर एक आदमी आया और उसने मुझे झुक कर प्रणाम किया।'

'"भैया, प्रणाम।"'

'मैंने पहचानने की कोशिश की। बहुत पहचाना–पहचाना तो लग रहा था। पर नाम याद नहीं आ रहा था। उसी ने कहा',

''भैया पहचाने नहीं? हम बाबू हैं, बाबू। उधर वाली आंटीजी के घर काम करते थे।''

'मैंने पहचान लिया। अरे ये तो बाबू है। सी ब्लॉक वाली आंटीजी का नौकर।'

'"अरे बाबू, तुम तो बहुत तंदुरुस्त हो गए हो। आंटी कैसी हैं?"'

'बाबू हँसा',

'"आंटी तो गईं।"'

'"गईं? कहां गईं? उनका बेटा विदेश में था, वहीं चली गईं क्या? ठीक ही किया, उन्होंने। यहां अकेले रहने का क्या मतलब था?"'

'अब बाबू थोड़ा गंभीर हुआ। उसने हंसना रोक कर कहा',

'"भैया, आंटीजी भगवान जी के पास चली गईं।"'
'"भगवान जी के पास? ओह! कब?"'
'बाबू ने धीरे से कहा',
'"दो महीने हो गए।"'
'"क्या हुआ था आंटी को?"'

'"कुछ नहीं। बुढ़ापा ही बीमारी थी। उनका बेटा भी बहुत दिनों से नहीं आया था। उसे याद करती थीं। पर अपना घर छोड़ कर वहां नहीं गईं। कहती थीं कि यहां से चली जाऊंगी तो कोई मकान पर कब्जा कर लेगा। बहुत मेहनत से ये मकान बना है।"'

'"हां, वो तो पता ही है। तुमने खूब सेवा की। अब तो वो चली गईं। अब तुम क्या करोगे?"'

'अब बाबू फिर हंसा,'
''मैं क्या करुंगा भैया? पहले अकेला था। अब गांव से फैमिली को ले आया हूं। दोनों बच्चे और पत्नी अब यहीं रहते हैं।''

रामचरित मानस हिन्दी साहित्य का कोहनूर है – यशोदानंदन अखौरी

'"यहीं मतलब उसी मकान में?"

''जी भैया। आंटी के जाने के बाद उनका बेटा आया था। एक हफ्ता रुक कर चले गए। मुझसे कह गए हैं कि घर देखते रहना। चार कमरे का इतना बड़ा फ्लैट है। मैं अकेला कैसे देखता? भैया ने कहा कि तुम यहीं रह कर घर की देखभाल करते रहो। वो वहां से पैसे भी भेजने लगे हैं। और सबसे बड़ी बात ये है कि मेरे बच्चों को यहीं स्कूल में एडमिशन मिल गया है। अब आराम से हूं। कुछ–कुछ काम बाहर भी कर लेता हूं। भैया सारा सामान भी छोड़ गए हैं। कह रहे थे कि दूर देश ले जाने में कोई फायदा नहीं।''

'मैं हैरान था। बाबू पहले साइकिल से चलता था। आंटी थीं तो उनकी देखभाल करता था। पर अब जब आंटी चली गईं तो वो चार कमरे के मकान में आराम से रह रहा है।'

'आंटी अपने बेटे के पास नहीं गईं कि कहीं कोई मकान पर कब्जा न कर ले।'

'बेटा मकान नौकर को दे गया है, ये सोच कर कि वो रहेगा तो मकान बचा रहेगा।'

'मुझे पता है, मकान बहुत मेहनत से बनते हैं। पर ऐसी मेहनत किस काम की, जिसके आप सिर्फ पहरेदार बन कर रह जाएं?'

'मकान के लिए आंटी बेटे के पास नहीं गईं। मकान के लिए बेटा मां को पास नहीं बुला पाया।'

'सच कहें तो हम लोग मकान के पहरेदार ही हैं।'

'जिसने मकान बनाया वो अब दुनिया में ही नहीं है। जो हैं, उसके बारे में तो बाबू भी जानता है कि वो अब यहां कभी नहीं आएंगे।'

'मैंने बाबू से पूछा कि,'

''तुमने भैया को बता दिया कि तुम्हारी फैमिली भी यहां आ गई है?''

''इसमें बताने वाली क्या बात है भैया? वो अब कौन यहां आने वाले हैं? और मैं अकेला यहां क्या करता? जब आएंगे तो देखेंगे। पर जब मां थीं तो आए नहीं, उनके बाद क्या आना? मकान की चिंता है, तो वो मैं कहीं लेकर जा नहीं रहा। मैं तो देखभाल ही कर रहा हूं।''

'बाबू फिर हँसा।'

'बाबू से मैंने हाथ मिलाया। मैं समझ रहा था कि बाबू अब नौकर नहीं रहा। वो मकान मालिक हो गया है।'

'हँसते–हँसते मैंने बाबू से कहा',

'"भाई, जिसने ये बात कही है कि'

'मूर्ख आदमी मकान बनवाता है, बुद्धिमान आदमी उसमें रहता है,'

'उसे जिंदगी का कितना गहरा तजुर्बा रहा होगा।"'

'बाबू ने धीरे से कहा,'
'"साहब, सब किस्मत की बात है।"'
'मैं वहां से चल पड़ा था ये सोचते हुए कि सचमुच सब किस्मत की ही बात है।'

''लौटते हुए मेरे कानों में बाबू की हंसी गूंज रही थी...'
'"मैं मकान लेकर कहीं जाऊंगा थोड़े ही ? मैं तो देखभाल ही कर रहा हूं।"'

'मैं सोच रहा था, मकान लेकर कौन जाता है?'

'सब देखभाल ही तो करते हैं।'

'आज यह किस्सा पढ़कर लगा कि हम सभी क्या कर रहे है ....जिन्दगी के चार दिन है मिल जुल कर हँसतें हँसाते गुजार ले ...क्या पता कब बुलावा आ जाए.... क्योकि इस धरा का, इस धरा पर ,सब यहीं धरा रह जायेगा....'

शैलेश भिवगडे
मुख्यालय, मॉयल लिमिटेड

छात्र के साथ बातचीत

'अध्ययनकाल' हर छात्र के जीवन का सर्वश्रेष्ठ काल है। इन दिनों आप संसार के जाल में नही फँसे रहते हैं। पढना–लिखना, खेलकूद करना और बिंदास और निश्चिन्त रहने के ये दिन होते हैं। इन दिनों आप महात्मा जैसे रहते हैं। माता–पिता के आशा के दीप समान और राष्ट्र के आधारस्तंभ और मानवसमाज के सबसे मूल्यवान घटक रहते हैं। आपके विकास के बारे में समाज को एक आस्था रहती है और आपकी उन्नति का राष्ट्र को अभिमान रहता है। आप खिलनेवाले फूलों की तरह, आपके हँसते हुए चेहरे, आपका उत्साह और कर्मरूप से बहने वाली शक्तिधारा देख कर हर एक व्यक्ति को आनंद मिलता है। प्रौढ़ और वयस्क लोगों को कभी–कभी ऐसा लगता है कि वो छात्र वाले दिन कितने अच्छे थे। जीवन के छात्र वाले वे दिन यादगार रहते है। निष्पाप और विकसनशील जीवन के लिए प्रौढ और वयस्क लोगों का आशीर्वाद और माता–पिता तथा आपसी लोगों की शुभकामनाए आपके साथ रहती है।

शुभकामनाएँ और आर्शीवाद देते समय वे कुछ सूचनाएं भी देते है। आपके छात्र का भाग्य बनाने के लिए उनका पूर्णविकास के लिए जीवन के उददेश्य को पूर्ण करने के लिए तथा जीवन कृतकृत्य होने के लिए यह सूचना मार्गदर्शक बनती है। छात्रों यह सूचना यानि आदेश–निर्देश या उपदेश ना होकर हमारे अनुभवी जीवन का सुगंधित सार रहता है। यह सूचना छात्रों के कुछ प्यारी भेंट है। छात्रों के जीवन का कुछ आदर्शवाद और सर्वोच्च पद मिलने की चाहत रहती है। उपदेश न होकर यह शब्द सुमनों का गंध लो, इनका जीवन में उपयोग करो और अविनाशि सुख प्राप्त करो। छात्र का काम है पढना–लिखना, जिसका उद्देश्य है सत्य को जानना, दुनिया में जो हो रहा है उसका कारण है इच्छा अर्थात जिज्ञासापूर्ण करना। अँधेरे से प्रकाश की ओर जाना, जो कुछ सिखोगे उसका विचार करो, सच–झूठ पर निश्पक्ष रहकर चिंतन करो, विवेक के सहारे जो सच लग रहा हो वह मान्य करो, झूठ लगता हो तो छोड़ दो और कोई साधन न हो तो पढो, सुनो और समझने का प्रयास करो, परन्तु उसके बारे में निश्चित मत, मत बनाईये।

विद्यार्थी जीवन में मन लगाकर पढाई करना आवश्यक है पर उसके साथ ही सात्विक भोजन, स्वास्थ्य, चरित्र की भी आवश्यकता है। विद्यार्जन के दिन यह जीवन के शुरूआती कुछ अच्छा निर्माण करने के दिन रहते है, जो संस्कार उसे जीवन की इमारत खड़े करने के रहते है।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

लीशा नायडू
तिरोड़ी खान

पूरे भारत में लड़कियो को शिक्षित बनाने और उन्हें बचाने के लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ नाम से लड़कियों के लिये एक योजनाा की शुरुवात की। इसका आरंभ हरियाणा के पानीपत में 22 जनवरी 2015, गुरुवार को हुआ। पूरे देश में हरियाणा में लिंगानुपात 775 लड़कियॉ पर 1000 लडकों का है जो बेटीयों की दयनीय स्थिति को दशार्ता है इसी वजह से इसकी शुरुवात हरियाणा राज्य से हुई है। लड़कियो की दशा को सुधारने के लिये पूरे देश के 100 जिलो (अंबाला, कुरुक्षेत्र, रिवारी, भिवानी, महेन्द्रगण, सोनीपत, झज्जर, रोहतक, करनाल, यमूना नगर, पानीपत, और कैथाल) को चुना गया ।

लड़कियो की दशा को सुधारने और उन्हें महत्व देने के लिये हरियाणा सरकार 14 जनवरी को **''बेटी की लोहड़ी''** नाम से एक कार्यक्रम मनाती है। इस योजना का उद्देश्य लड़कियों को सामाजिक और आर्थिक रुप से स्वतंत्र बनाना है, जिससे वो अपने उचित अधिकार और उच्च शिक्षा का प्रयोग कर सकें। आम जन में जागरुकता फैलाने में ये मदद करता हैं साथ ही महिलाओं को दिये जाने वाले लोक कल्याणकारी सेवाएँ की कार्यकुशलता को भी बढ़ाएगा। अगर हम 2011 मे सेंसस रिपोर्ट पर नजर डाले तो हम पाएँगे कि पिछले कुछ दशको से 0 से 6 वर्ष के लडकियों की संख्या में लगातार गिरावट हो रही है। 2001 में ये 927 / 1000 था जबकि 2011 में ये और गिर कर 919 / 1000 पर आ गया। अस्पतालों में आधुनिक लक्षण यंत्रो के द्वारा लिंग पता करने के बाद गर्भ में ही कन्या भ्रूण की हत्या करने की वजह से लड़कियों की संख्या में भारी कमी आई है। समाज में लैंगिक भेदभाव की वजह से ये बुरी प्रथा अस्तित्व में आ गयी।

जन्म के बाद भी लड़कियों को कई तरह के भेदभाव से गुजरना पड़ता है जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, खान–पान, अधिकार आदि दूसरी जरुरतें है जो लड़कियों को प्राप्त होनी चाहिए। हम कह सकते है कि महिलाओं को सशक्त करने के बजाय अशक्त किया जा रहा है। महिलाओं को सशक्त बनाने और जन्म से ही अधिकार देने के लिये सरकार ने इस योजना की शुरुवात की। महिलाओं के सशक्तिकरण से सभी जगह प्रगति होगी खासतौर से परिवार और समाज में संभव है कि इस योजना योजना की शुरुवात करते हुए पीएम मोदी ने चिकित्सक बिरादरी को ये याद दिलाया कि चिकित्सा पेशा लोगों को जीवन देने के लिए बना है ना कि उन्हें खत्म करने के लिए।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ क्योंकि
बेटिया तो है ईश्वर का उपहार ।
मत छीनो इनके जीने का अधिकार।।
जिस बेटी के दम पर देखो
महक रही है धरती।
कभी गर्भ में वो मरती तो कभी
देहज की बलि है चढती।।

प्राण वायु : ऑक्सीजन

"If trees produced wifi we'd be planting them everywhere. .... Too bad they only produce oxygen"

मेघा भारतकर
तिरोड़ी खान

नमस्ते दोस्तो!

मैं आपकी प्राणवायु हूँ। मुझे रसायन विज्ञान में ऑक्सीजन कहा जाता है। मैं O_2 सें दर्शायी जाती हूँ। मैं आप सभी मानव और अन्य जीवों के लिये प्राणदायनी हुँ, मगर अफसोस इस बात का है कि मुझे बनाने वाले पेड़–पौधों को आप काट रहे है। वनों की कटाई के कारण वायुमण्डल में मेरी उपस्थिति कम हो रही है। जिसकी कीमत आप सभी आज मुझे खरीद कर चुका रहे हो। यदि वन ही नही होंगे तो मेरी उपस्थिति दिन–ब–दिन कम होती जायेगी जोकि सारे जीवमण्डल के लिये कष्टदायी स्थिति पैदा कर सकती है।

मै रंगहीन, स्वादरहित तथा गन्धरहित गैस हुँ। मेंरी खोज या प्रारम्भिक अध्ययन में जे. प्रीस्टले और सी. डब्लयु शेले ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। मै रासायनिक तत्व हूँ। सन् 1772 ई. में कार्ल शीले ने पौटेशियम नाइट्रेट को गर्म करके आक्सीजन गैस तैयार किया,किन्तु उनका यह कार्य सन 1777 ई. में प्रकाशित हुआ।

ऑक्सीजन इस शब्द का अर्थ है–अम्ल उत्पादक। तत्व सारणी मे परमाणु संख्या 8 और परमाणु भार 16 है।

मै पृथ्वी के अनेक पदार्थो में रहता है जैसे पानी और वास्तव में अन्य तत्वों की तुलना में इसकी मात्रा सबसे अधिक है। वायुमण्डल में मै स्वतंत्र रूप सें मिलती हुँ, आयतन के हिसाब सें लगभग पॉचवा भाग है। यौगिक रूप में पानी, खनिज तथा चटटानों का यह महत्वपूर्ण अंश है। वनस्पति तथा प्राणियो के प्रायः सब शारीरिक पदार्थों का ऑक्सीजन एक आवश्यक तत्व है। वायुमण्डल में इसकी मात्रा 20.95 प्रतिशत होती है। मेरा (ऑक्सीजन) घनत्व 1.4290 ग्रात प्रति लीटर है और वायु की अपेक्षा यह वायु 1.10526 गुना भारी है। द्रव आक्सीजन हल्के नीले रंग का होता है। मेरा क्वथनांक 183 डिग्री से. तथा ठोस आक्सीजन का द्रवणांक 218.4 डिग्री सें है। ऑक्सीजन पानी मे घुलनशील है, जो जलीय प्राणियों के श्वसन के लिये उपयोगी है। कुछ धातुऐं (जैसे पिघली हुई चाँदी) अथवा कोयला मेरा अवशोषण बड़ी मात्रा मे कर लेती है। मेरा उपयोग अधिकतर श्वसन व अनेक

क्रियाविधियों के लिये किया जाता है। दहन क्रिया में मेरा महत्वपुर्ण कार्य है, मेरे बिना किसी भी प्रकार की आग नही लगाई जा सकती है। दहकते हुये तिनके के प्रज्वलित होने सें आक्सीजन की पहचान की जाती है।

चिकित्सा मे मेरा (ऑक्सीजन) कई प्रकार सें उपयोगी है। यह उपचार रोगी के रक्त मे ऑक्सीजन के स्तर को बढ़ाता है। इसके अलावा दूसरा प्रभाव यह होता है कि कई प्रकार के रोगग्रस्त फेफड़ों मे रक्त के प्रवाह के प्रतिरोध को कम करता है।इस प्रकार यह हदय के काम का बोझ कम करती हुॅ। आक्सीजन थेरेपी का उपयोग अन्य रोगों मे भी होता है, जैसें – वातस्फीति, निमोनिया कुछ हदय विकारों जिनके कारण फुफुसीय धमनी के दाब में वृद्धि हों जाती है। अतः मेरा उपयोग चिकित्सालयों में रोगी के घर में या पोर्टबल युक्तियों के रूप में किया जाता है। अब प्रायः आक्सीजन मास्क प्रचलन में आ गये है किन्तु पहलें ऑक्सीजन की कमी की पूर्ति लिये प्रायः ऑक्सीजन टेन्ट उपयोग मे किये जातें है।

मेरा आप सभी से निवेदन है कि यदि अपना जीवन खुशहाल जीना चाहते है तो पेड़ों को अधिक सें अधिक मात्रा मे लगायें और ऑक्सीजन की मात्रा वायुमण्डल में बढाने के लिये स्वंय और दूसरों को जागृत करे।

(पृष्ठ 37 का शेष)

कुछ देर की शांति के बाद अपनी बात जारी रखते हुए फिर वो बुजुर्ग बोले कि मैं सोसाइटी में पिछले कई वर्षों से रहता हूं और आज तक किसी को यह नहीं बताया कि मैं दो बार संसद सदस्य रह चुका हूं। वो जो सामने वर्मा जी बैठे हैं, रेलवे के महाप्रबंधक थे। वे सामने से आ रहे सिंह साहब सेना में ब्रिगेडियर थे। वो मेहरा जी इसरो में चीफ थे। ये बात भी उन्होंने किसी को नहीं बताई है, मुझे भी नहीं, पर मैं जानता हूं।

सारे फ्यूज बल्ब करीब – करीब एक जैसे ही हो जाते हैं, चाहे जीरो वाट का हो 40, 60, 100 वाट, हेलोजन या फ्लड–लाइट का हो, कोई रोशनी नहीं, कोई उपयोगिता नहीं, यह बात आप जिस दिन समझ लेंगे, आप शांतिपूर्ण तरीके से समाज में रह सकेंगे।

उगते सूर्य को जल चढ़ा कर सभी पूजा करते हैं। पर, डूबते सूरज की कोई पूजा नहीं करता।

यह बात जितनी जल्दी समझ में आ जाएगी, उतनी जल्दी जिन्दगी आसान हो जाएगी। कुछ लोग अपने पद को लेकर इतने वहम में होते हैं कि रिटायरमेंट के बाद भी उनसे अपने अच्छे दिन भुलाए नहीं भूलते। वे अपने घर के आगे नेम प्लेट लगाते हैं – सक्सेना गुर्जर मीणा मिश्रा गुप्ता मेघवाल खान अहमद फ्रांसिस जैन चौधरी तिवारी, विश्वकर्मा वर्मा ,रिटायर्ड आइएएस.. पीसीएस.. आईपीएस.. सिंह ..... रिटायर्ड जज आदि – आदि।

ये रिटायर्ड *IAS/RAS/sdm/rglhynkj/* पटवारीध बाबू प्रोफेसर प्रिंसिपल अध्यापक कौन–सा पोस्ट होता है भाई माना कि आप बहुत बड़े आफिसर थे, बहुत काबिल भी थे, पूरे महकमे में आपकी तूती बोलती थी पर अब क्या?

अब तो आप फ्यूज बल्ब ही तो हैं।

यह बात कोई मायने नहीं रखती कि आप किस विभाग में थे, कितने बड़े पद पर थे, कितने मेडल आपने जीते हैं।

तो वह यह है कि आप इंसान कैसे है...
आपने कितनी जिन्दगी को छुआ है...
आपने आम लोगों को कितनी तवज्जो दी..
पद पर रहते हुए कितनी मदद की...
समाज को क्या दिया...

'हमेशा याद रखिए', बड़ा अधिकारी कर्मचारी बनना बड़ी बात नहीं, बड़ा इंसान बनना बड़ी बात जरूर है। इस लिए अच्छे इंसान बनिए और कुढ़ना बंद कीजिए, जिंदगी संवर जाएगी।

डॉ. जय प्रकाश
पैनल अनुवादक

शिक्षक दिवस

(दि. 05 सितंबर, 2019 को शैक्षणिक समारोह में दिए गये भाषण पर आधारित)

आदरणीय गुरूजन! सादर नमन।

शिक्षक दिवस के इस पावन अवसर पर मैं आप सभी का कृतज्ञ भाव से अभिवादन करता हूँ और शिक्षण–जगत की समस्त विभूतियों को भी हृदय से प्रणाम करता हूँ।

प्रिय साथियों!

हमारे लिए यह सौभाग्य की बात है कि हम आज उस गौरवपूर्ण क्षण की परम्परा को आगे ले जाने में सहभागी बन पा रहे हैं कि जब भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति महोदय श्री सर्वपल्ली राधाकृष्णनन् जी अपने जन्मदिवस को शिक्षक दिवस का नाम देकर गुरूजनों को एवं उनकी महत्वपूर्ण भूमिकाओं को सम्मानित किया था। वास्तव में, माता–पिता और गुरू ही हमारी प्रगति के सच्चे शुभकाँक्षी होते हैं। यद्यपि शास्त्रों में, गुरू की महिमा और गुरू की स्तुति की अनेकों बातें मिलती हैं पर एक विज्ञान वर्ग का विद्यार्थी होने के नाते मेरा सीधा जुड़ाव उन सद्ग्रन्थों से नहीं हो सका है। फिर भी मैं गुरू, उस्ताद, कोच, ट्रेनर और प्रोफेसर के रूप में उनकी महिमा और जादू का कायल हूँ। धन्य हैं, वे गुरूजन जिन्होंने गाँधी में सत्य, अहिंसा स्थापित कर दी, कलाम को बेमिसाल कर दिया, बछेन्द्री पाल को हिमालय पर चढ़ा दिया, सचिन को क्रिकेट का भगवान और अम्बेडकर को महामानव बना दिया। ये हमारे कोच, हमारे ट्रेनर का ही महान गुण है जो एक घरेलू महिला मैरीकॉम की मुट्ठियों में फौलाद की ताकत भर देता है, पी.वी. सिन्धु को हवा सी तेजी दे देता है और गीता फोगाट को अपरिमित शक्ति से भर देता है। धन्य हैं आप गुरूजन, क्योंकि आप की ही एक छोटी सी प्रेरणा हम निश्प्राणों में ऊर्जा का संचार कर देती है।

हमारे समान ही शरीरधारी इन दिव्यपुंजों के प्रति हमारे मन में केवल श्रद्धा ही श्रद्धा वास करती है। भले ही हम भौतिक जीवन जिएं या फिर आध्यात्मिक, इनके बिना हमारा काम नहीं चल सकता है। संसार में असंख्य पुस्तकें उपलब्ध हैं और न जाने कितनी आगे भी सृजित होती रहेंगी, लेकिन ज्ञान की सागर इन पुस्तकों को भी अपना रहस्य उद्घाटित करने के लिए एक उद्घाटक की आवश्यकता होती है अर्थात् गुरू बिन ज्ञान न होवे।

मेरा विज्ञान कहता है कि बर्मे से लकड़ी पर घूर्णन करने से छेद हो जाता है लेकिन यह नहीं बताया कि यदि बर्मा सही कोण से पकड़कर न चलाया जाए तो हाथ में छाले पड़ जाएंगें। यह गूढ़ता तो केवल गुरू का अनुभव ही बता सकता है। एक कुशल नाविक भी

बिना सही मार्गदर्शन के तट तक नहीं पहुँच सकता है। यहाँ अरस्तू की बात मुझे बहुत ठीक लगती है कि जन्म देने वालों से, अच्छी शिक्षा देने वालों को अधिक सम्मान दिया जाना चाहिए, क्योंकि माता–पिता ने तो बस जन्म दिया है, पर गुरू ने जीना सिखाया है इसलिए पूरे जीवन पर शिक्षक का प्रभाव होता है।

शिक्षक का सीधा जुड़ाव केवल छात्र तक ही सीमित नहीं होता है। उनके श्रम से ही एक सुनागरिक, उद्यमी, प्रशासक, कलाकार और खिलाड़ी पैदा होते हैं। परन्तु आज समाज जिन चुनौतियों का सामना कर रहा है उसका समाधान केवल शिक्षकों के पास ही है। उनका एक आवाहन या डाँट हज़ारों विद्यार्थियों का ध्यान खींच लेता है तो भला उनकी बात को कौन अनसुना करेगा? शिक्षक ज्ञान के साथ विवेक का रोपण कर सुसभ्य समाज का सब्जबाग तैयार कर सकता है। अगर देखें तो दो तरह के शिक्षक होते हैं– एक वो जो आपको इतना भयभीत कर देते हैं कि आप हिल न सकें, और दूसरे वो जो आपको पीछे से थोडा सा थपथपा देते हैं और आप आसमान छू लेते हैं। अतः शिक्षक की इसी गुणवत्ता की जरूरत आज समाज को पड़ रही है। आज हर तरफ लोग डाक्टर, इंजीनियर और अफसर बनने की दौड़ में भागे जा रहे हैं और बन भी रहे है। पर इन अच्छे डाक्टर–इंजीनियरों के समाज में बहुत सी बुराइयाँ भी हैं जिनका इलाज या ट्रीटमेन्ट टेक्निक किसी डॉक्टर–इंजीनियर के पास नहीं हैं। आज हमें अच्छे डाक्टर, कुशल इंजीनियर और समझदार अफसर से ज्यादा एक अच्छे सामाजिक इंसान की जरूरत है। भला, किस फैक्टरी से इन्हें हम लाकर समाज में फैला दें। आज समझ में आता है कि उस रात गुरूनानक देवजी ने क्यों अच्छे लोगों को उनके गाँव के बाहर बिखर जाने की बात कही थी।

आज देश को नैतिक रूप से मजबूत बनाने की सख्त जरूरत है। एक–एक शिक्षक उस अलौकिक दीप की तरह है जो हर बुझे को रोशनी से जगमगा देता है। लेकिन आज शिक्षकों को भी इस अपेक्षा पर खरे उतरने की आवश्यकता है। समाज में उन्हें पुनः अपने को स्थापित करने की आवश्यकता है। समाज को डिगरी से ज्यादा आज जिगरी–अध्यापक की जरूरत है। भारत जगद्गुरू श्रेष्ठ आचार्यों एवं विद्वानों के कारण ही था। यह तो कब का यूनानियों के हाथों बिक गया होता पर गुरू चाणक्य की कूटनीति ने ही भारत को बचाया और विश्व का सिरमौर बनाया।

प्रिय सहपाठियों!

शिक्षक दिवस का दिन आयोजित करना हम सभी के लिए गर्व की बात है हमारे गुरूजनों को भी अपार आनंद तब होगा जब हम उनसे ज्ञान प्राप्त कर उसका सदुपयोग करते हुए अपना और उनका नाम रोशन करें। लोग पूछे कि तुम्हें सिखाने वाला कौन है? मुझे अँग्रेजी के कवि हेनरी एल डेरेजियो की कविता 'टू द प्यूपिल' याद आती हैं जिसमें वह कहते हैं कि मेरे शिक्षक पेशे में मुझे तब तसल्ली मिलती है जब मैं सफलता से प्रसन्न अपने विद्यार्थियों के गले में विजेता की माला देखता हूँ, मुझे लगता है कि जैसे मैंने ही जीत हासिल कर ली हो, माला मेरे ही गले झूम रही है। सच में, प्रणम्य है शिक्षक का परिश्रम और त्याग। अपनी सीमित जिन्दगी में वह छात्र और समाज के लिए ही आजीवन लगा रहता है, तो क्या शिक्षा प्राप्त करने के बाद हमें भी उन्हें विस्मृत कर देना उचित है? नहीं, बिल्कुल नहीं! कभी किसी सेवानिवृत्त या पुराने अध्यापक से मिल कर देखिए, शायद उस सुख का अनुभव कर सकेंगे। चूँकि आज यह एक शुभ दिन है इसलिए कुछ कहने का प्रयास कर रहा हूँ अन्यथा बहुत सी अन्तर्भूत बातें हैं जिन्हें मैं व्यक्त नहीं कर सकता हूँ।

आदरणीय गुरूजनों!

मुझे पढ़ना–लिखना सिखाने के लिए धन्यवाद!

मुझे सही–गलत की पहचान सिखाने के लिए धन्यवाद!

मुझे बड़े सपने देखने और आकाश को चूमने का साहस देने के लिए धन्यवाद!

मेरा मित्र, गुरु और प्रकाश बनने के लिए धन्यवाद!

मैं भाग्यशाली था कि मुझे आप जैसे गुरु प्राप्त हुए. शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

नमस्कार!

आत्मविश्वास

Umbrella cannot stop the rain, but make us stand in the rain.
Confidence may not bring success but gives power to face any challenge of life.

ऊपर उद्धृत पंक्तियाँ एक बहुत बड़ी सच्चाई को आपके सामने रखती है। बेशक, दिक्क्तों की बरसात को हम रोक तो नहीं सकते पर अगर हमारे पास आत्मविश्वास और सहनशीलता की छतरी हो तो अवश्य ही हम उसका डटकर सामना जरूर कर सकते हैं। यह भी सच है कि केवल मन में आत्मविश्वास रखकर हमें सफलता भी नहीं मिल सकती है लेकिन आत्मविश्वास के रहते हमें सफलता की राह पर मिलने वाली मुसीबतों से लड़ने की शक्ति जरूरी मिल जाती है।

आत्मविश्वास, एक गजब की चीज़ है। यह सभी में होती है, परन्तु जो इसका सही इस्तेमाल करता है उसका जीवन सफलता और जिन्दादिली से भर जाता है। खुद के प्रयास से आत्मविश्वास को बढ़ाया जा सकता है। जीवन में ऐसे बहुत से प्रसंग आते हैं जब आत्मविश्वास की बहुत जरूरत होती है। एक पारखी व्यक्ति उस समय अपने आत्मविश्वास का प्रयोग कर समस्या पर विजय प्राप्त कर लेता है परन्तु कुछ तो स्वयं को दीन–हीन समझकर नादानी से भरा कदम उठा लेते हैं। यहाँ कुछ कथाओं के माध्यम से हम आत्मविश्वास की महत्ता को समझने का प्रयास करेंगे जो आपके जीवन में भी उपयोगी हो सकती हैं।

एक बार अपने कश्ट के दिनों में फ्रांस का महान शासक नेपोलियन दर–दर भटक रहा था तो ऐसे में वह एलबाबेट से भागकर जब फ्रांस की भूमि पर आया तो वहाँ पर वह फ्रांसीसी सैनिकों के द्वारा बंदी बना लिया गया। सैनिकों का सेनापति, एक सयम खुद नेपोलियन के साथ सैनिक था जो उन सैनिकों का नेतृत्व कर रहा था। उस समय नेपोलियन अकेला तथा शस्त्रहीन था, उसे इस बात का अंदाजा था कि उसे प्राणदण्ड दिया जाएगा। परन्तु वह घबराया नहीं। उसने बड़ी हिम्मत से, रौबीली आवाज में तेजी से सैनिकों से बोला, अरे मेरे वीर सैनिकों! तूम अपने ही सम्राट को कैद करोगे? मैं तुम्हारा प्रतिकार नहीं

करूँगा, पर तुम अपनी अंतरात्मा से निर्णय लेना। थोड़े ही देर में सभी सैनिक नेपोलियन के पक्ष में हो गए और उसे फ्रांस का सम्राट बना दिया। वास्तव में आत्मविश्वास के बल पर तो संसार भी जीता जा सकता है। इसके लिए बस थोड़ा से स्वप्रयास की आवश्यकता होती है।

एक और महत्वपूर्ण कथा बताना चाहूँगा जिसमें आत्मविश्वास का अभाव किस प्रकार जीवन को प्रभावित करता है। क्या आपने कभी सोचा है कि भला, हाथी जैसे विशाल और शक्तिशाली जीव को इंसान ने पालतू कैसे बनाया होगा। सोचकर, यह कार्य दुश्कर और असंभव लगता है। अगर ध्यान दें तो यह घटना सिक्के के दो पहलुओं की तरह है एक ओर हाथी के आत्मविश्वास का हरण तो दूसरी ओर इंसान का मजबूत आत्मविश्वास जो हर बार बढ़ता ही जाता है।

इस कथा की शुरूआत इस तरह है कि इंसान, हाथी जैसे ताकतवर जानवर को काबू में करना चाहता था और शक्तिसम्पन्न बनना चाहता था। इसके लिए उसने एक हाथी के शावक को पकड़कर तिनकों से बनी रस्सी से बाँध दिया। शावक मुक्त होने के लिए तृणबंध को बार–बार तोड़ने का प्रयास करता पर असफल हो जाता था।

इस प्रकार बार–बार के प्रयासों से भी जब तिनकों का बंधन नहीं टूटा तो शावक का आत्मविश्वास क्षीण हो गया उसने रस्सी को स्वयं से भी मजबूत मानकर, अपना विश्वास खो दिया। फलतः वह पालतू बना लिया गया और इंसानों की दयादृश्टि पर जीवनयापन करने लगा। दूसरी तरफ इंसान जो हाथी की अपेक्षा बहुत ही कमजोर था उसने अपने आत्मविश्वास और सूझ से हाथी जैसे विशाल जीव को भी नियंत्रित कर लिया।

आत्मविश्वास के मोल को समझना बहुत जरूरी है। जीवन में बड़े से बड़े कठिनाई का सामना आत्मविश्वास से ही होता है। यदि हम इसे खो देते हैं तो थोड़ी सी भी परेशानी हमें कमजोर बना सकती है।

बहुत बार हम बढ़े हुए कार्यालयी कामकाज को बोझ मानकर परेशान हो जाते हैं और शिकायत करते हैं लेकिन अगर हम धैर्यपूर्वक विचार करें तो इसका समाधान किया जा सकता है। हमें पूरे कामकाज का बँटवारा इस प्रकार करना चाहिए कि उनमें से छोटे–छोटे कार्यों को शीघ्र निपटा लिया जाए, इससे छोटे–छोटे कामों की पूर्णता, कुल काम का एक बड़ा प्रतिशत को पूरा हुआ दर्शाती है। अर्थात कुल 10 कामों में से 6 छोटे–छोटे कामों की पूर्णता एक अच्छा प्रतिशत है जो आपके काम को बेहतर दर्शाने के साथ–साथ आपमें आत्मविश्वास भी जगाती है।

इसके अतिरिक्त यह भी कि खुद के कार्य से मिलने वाला आत्मविश्वास अपने को अधिक प्रतिश्ठा भी देता है। आत्मविश्वास के अभाव से काम में आलस्य और एकाग्रता की कमी होती है। हर प्रकार की शक्ति को धारण करने के लिए आत्मविश्वास का होना जरूरी है।

यह भी आवश्यक है कि आत्मविश्वास कैसे जगाएं? इसके लिए हमें आत्मपरीक्षण करना होगा कि हमारे भीतर का कौन सा गुण है जो हमें मजबूत बना सकता है। बस उसी को आधार बनाकर हमें बेहतर प्रदर्शन करने का प्रयास करना चाहिए। यदि महान सुर साम्राज्ञी लता मंगेशकर जी ने गायन के बजाय लेखन, नृत्य या तैराकी जैसे क्षेत्र को चुना होता तो शायद वह उतना आत्मविश्वास न सँजो पाती जितना आत्मविश्वास और ख्याति उन्होंने एक गायिका के रूप में अर्जित की है। शायद ऐसा ही कुछ महान क्रिकेट खिलाड़ी सचिन तेन्दुलकर के साथ भी होता यदि वह अपनी खेल प्रदर्शन की शक्ति को पहचानकर उसमें अपना आत्मविश्वास न बनाते।

इसलिए अपने आत्मविश्वास को पहचानिए और सफलता की राहों को जीत लीजिए। मेरा सुझाव है कि आज ही वह बेहतर दिन है जब आप यह निर्णय लें कि हमारे भीतर कौन सी छिपी शक्ति, कला या हुनर है जो हमें बुलंदियों पर पहुँचा सकती है। तो सोचिए स्वयं के बारे में और अपने आत्मविश्वास को जगाइये।

पेशेवर तरीके से ईमेल कैसे लिखें?

ईमेल, सूचना को अच्छी तरह से प्रस्तुत करने, पढ़ने में आसान और पेशेवर रूप में उपयुक्त तरीके से संप्रेषित करने का एक कुशल तरीका है। यह व्यापक रूप से सस्ता लेकिन अत्यधिक प्रभावी व्यावसायिक संचार उपकरण के रूप में उपयोग किया जाता है। ईमेल के प्रिंटआउट शायद ही कभी लिए जाते हैं और सॉफ्ट कॉपी का उपयोग किया जाता है, क्योंकि ईमेल को संग्रह करना और प्राप्त करना आसान होता है। इसकी लोकप्रियता का कारण, पहुंच में आसानी है, जिसका उपयोग किसी संगठन में विभाग के प्रमुख से लेकर विभाग में कनिष्ठतम, प्रत्येक कर सकता है।

ईमेल शिष्टाचार सम्मान और सामान्य समझ के बारे में है। वही सम्मान और व्यावसायिकता जिसकी आप दूसरों से अपेक्षा करते हैं, जो आपके स्वयं के संचार लिखते समय भी महत्वपूर्ण है। ईमेल संचार का एक रूप है। लिखित पत्र, टेलीफोन वार्तालाप और आमने-सामने भाषण की तरह ईमेल, शिष्टाचार द्वारा निर्देशित है। हम संचार के कभी रूपों में मार्गदर्शन करने के लिए आपसी सम्मान और सामान्य समझ का उपयोग करते हैं।

स्वर्णिम नियमः याद रखें कि हर इलेक्ट्रॉनिक संदेश एक अनुगमी छोड़ देता है।

एक मूल दिशानिर्देश यह मान लेना है कि अन्य लोग वही देखेंगे, जो आप लिखते हैं, इसलिए कुछ भी ऐसा न लिखें, जिसे आप नहीं चाहेंगे कि प्रत्येक देखे। दूसरे शब्दों में, ऐसा कुछ भी न लिखें, जो आप के लिए पतनकारी या दूसरों के लिए हानिकारक हो। आखिरकार, ईमेल अग्रेषित करना खतरनाक रूप से आसान है, और खेदजनक स्थिति से सुरक्षित रहना बेहतर है।

बहुत से लोग टेक्स्ट मैसेजिंग के साथ ईमेल की गलती करते हैं, या कम से कम ईमेल लिखने के प्रति उनका दृष्टिकोण यही दर्शाता है। इसकी तुलना में, ईमेल पेशेवरों द्वारा पढ़े जाते हैं, जो अपने काम के आधार पर, दिन में 20 से 200 ईमेल के बीच कुछ भी प्राप्त कर सकते हैं। वे न तो आगे-पीछे की बातचीत में शामिल होना चाहते हैं, न ही कई बार विवरण मांगणे का समय होता है। वे केवल ईमेल की सामग्री को समझना चाहते हैं, अनुदेशों को पढ़ते हैं, जानकारी को प्रक्रमित करते हैं, कार्य पूरा करते हैं और इनबॉक्स के ''अपठित'' खंड को खाली करते हैं।

आपके ईमेल पूरी तरह से अधिकारिक/पेशेवर हैं, यह सुनिश्चित करने के लिए पांच सरल कदम।

1. अभिवादन के साथ शुरूआत करें।
2. प्राप्तकर्ता को धन्यवाद करें।
3. अपना उद्देश्य बताएं।
4. अपनी समापन टिप्पणी जोंड़े।
5. समापन हस्ताक्षर के साथ समाप्त करें।

प्रभावी ईमेल लिखने की कुछ महत्वपूर्ण युक्तियां-

1. **''सभी को उत्तर दें''** अथवा **''Reply All''** पर क्लिक करने से दो बार सोचें

2. सुनिश्चित करें कि कार्यालय प्रक्रिया अनुसार पदानुक्रम बना रहे, अर्थात यदि किसी कनिष्ठ को वरिष्ठ की ओर से कुछ बताने के लिए निर्देशित किया गया है, तो उसे इन पंक्तियों में ईमेल में ही उल्लेख करना होगा, जैसे-

''मुझे.....द्वारा संप्रेषित/सूचित करने के लिए.....निर्देशित किया गया है''

''यह फाइल संख्या....., दिनांक....., पर..... के अनुमोदन से जारी किया जा रहा है।''

''यह ईमेल.....से, दिनांक....., ईमेल पर..... के अनुमोदन से भेजा जा रहा है।''

3. प्राप्तकर्ता का ईमेल पता दोबारा जांचें।

हमेशा, जिसे मेल भेजा जाना है, उसका ईमेल पता अंत में लिखें, क्योंकि कोई भी गलती से संदेश को पूरा लिखने और प्रुफ-पठन से पहले ईमेल नहीं भेजना चाहता है। संदेश का जवाब देते हुए भी, प्राप्तकर्ता के पते को हटाना और संदेश लिखने के बाद ही उसे डालना एक अच्छा एहतियात है।''

4. पाठक का **ध्यान आकृष्ट करने के लिए विषय पंक्ति** का प्रयोग करें।

5. **अधिकारिक/पेशेवर अभिवादन का प्रयोग करें,** अर्थात प्रिय श्री...../महोदय/महोदया आदि, जैसे कि हम एक पत्र पर लिख रहे हों।

6. **याद रखें कि** - संदेश छोटा और स्पष्ट होना चाहिए और कुछ भी गोपनीय नहीं है, इसलिए तदनुसार लिखें।

हर इलेक्ट्रॉनिक संदेश एक अनुगामी छोड़ देता है। एक मूल दिशानिर्देश यह माना जाता है कि लोग देखेंगे कि आप क्या लिखते है और ऐसा कुछ भी नहीं लिखें जो आप नहीं चाहते कि हर कोई देखे। आखिरकार, ईमेल अग्रेषित करना खतरनाक रूप से आसान है, और खेदजनक स्थिति से सुरक्षित रहना बेहतर है।

7. **अपने संदेश की योजना बनाएं** : ध्यान रखें कि विभिन्न संस्कृतियों के लोग अलग-अलग तरीके से बोलते और लिखते हैं।

8. लोअर केस में अपना पूरा संदेश न लिखें/टाइप करें, स्पष्टता के लिए उचित फॉन्ट चुनें।

अपने फोंट को सही रखें, आम तौर पर, 10-या 12-पॉइंट प्रकार का प्रयोग करना बेहतर होता है और अंग्रेजी में (Arial, Calibari, Times New Roman) इत्यादि अथवा हिन्दी में यूनिकोड आधारित मंगल, अपराजिता फोंट्स काले रंग के साथ आसानी-से-पढ़े जाने वाले सबसे सुरक्षित विकल्प है।

9. इसे भेजने से पहले अपने संदेश का **प्रुफ़ पठन करें और जवाबदेही मानें।**

10. गुस्से में कोई भी **ईमेल भेजने से पहले कुछ मिनट शांत रहें।**

11. **अपने संदेश बड़े अक्षरों में बनाने से बचें** और केवल ध्यान केंद्रित करने के उद्देश्य से केवल चयनित शब्दों को ही बड़ा करें। बड़े अक्षरों को पुकार/अनादर/चिल्लाहट के रूप में भी माना जा सकता है।

12. संक्षेप में अपना परिचय दें - हर मेल उचित हस्ताक्षर के साथ समाप्त होना चाहिए जिसमें नाम, पदनाम, कार्यालय का पता, फोन नंबर हो, आखिरकार ईमेल केवल तेजी से कार्रवाई के लिए एक भौतिक पत्र का विकल्प है।

इस प्रयोजन के लिए एक ऑटो हस्ताक्षर विकल्प निम्नलिखित उदाहरण के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है

Preferences - Signature - Specimen Signature

सम्मान सहीत धन्यवाद/Thanks & Regards

राजभाषा अधिकारी/Incharge Official Language

मॉयल लिमिटेड/Moil Limited

कुछ मामलों में, ईमेल उपयुक्त नहीं हो सकता है। ऐसे में फोन कॉल करना ही अच्छा है, जब-

- आपको व्यक्तिगत, संवेदनशील या गोपनीय जानकारी पर चर्चा करनी हो।
- आप बुरी खबर देने वाले हों।
- आपका संदेश जटिल है और अर्थ शब्दों में खो सकता है।
- आपको तत्काल प्रतिक्रिया की आवश्यकता है।

ईमेल के कानूनी जोखिम

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि आजकल ईमेल संचार का पसंदीदा तरीका है, जो बहुत सारी जानकारी ले जाता है, जो गोपनीय हो सकती है। सावधान रहें कि इसे आगे भेजा जाना है।

ईमेल जानकारी की **सुरक्षा और गोपनीयता प्रेषक और प्राप्तकर्ता दोनों की संयुक्त जिम्मेदारी** है। दस्तावेजों और उनकी सामग्री की सुरक्षा के लिए सख्त दिशानिदेश हैं।

मेल के प्रेषक या उसके कार्यालय/विभाग को कानूनी मुकदमों के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सकता है, यदि-

- आप अपमानजनक सामग्री के साथ ईमेल भेजते हैं या अग्रेषित करते हैं।
- आप एक अनुलग्नक भेजें, जिसमें वायरस हो।
- आप बिना किसी अनुमति के प्रेषक के ईमेल भेजने का प्रयास करते हैं।
- आप दूसरों के ईमेल बनाने या दूसरों के खातों से ईमेल भेजने का प्रयास करते हैं।
- ईमेल भेजते समय आप प्राप्तकर्ताओं से अपनी पहचान छुपाने की कोशिश करते हैं।
- आप बिना अनुमति के किसी अन्य व्यक्ति से संबंधित संदेश की प्रतिलिपि बनाते हैं।

'पॉजिटिविटी'

हेमलता साखरे
मुख्यालय, मॉयल लिमिटेड

एक नर्स लंदन में ऑपरेशन से दो घंटे पहले मरीज के कमरे में जाकर कमरे में रखे गुलदस्ते को संवारने और ठीक करने लगी।

ऐसे ही जब वो अपने पूरे लगन के साथ काम में लगी थी, तभी अचानक उसने मरीज से पूछा सर आपका ऑपरेशन कौन सा डॉक्टर कर रहा है?

नर्स को देखे बिना मरीज ने अनमने से लहजे में कहा डॉ. जबसन।

नर्स ने डॉक्टर का नाम सुना और आश्चर्य से अपना काम छोड़ते हुये मरीज के पास पहुँची और पूछा सर, क्या डॉ. जबसन ने वास्तव में आपके ऑपरेशन को स्वीकार किया हैं?

मरीज ने कहा हाँ, मेरा ऑपरेशन वही कर रहे हैं।

नर्स ने कहा बड़ी अजीब बात है, विश्वास नहीं होता परेशान होते हुए मरीज ने पूछा लेकिन इसमें ऐसी क्या अजीब बात है?

नर्स ने कहा वास्तव में इस डॉक्टर ने अब तक हजारों ऑपरेशन किये हैं उसके ऑपरेशन में सफलता का अनुपात 100 प्रतिशत है। इनकी तीव्र व्यस्तता की वजह से इन्हें समय निकालना बहुत मुश्किल होता है। मैं हैरान हूँ आपका ऑपरेशन करने के लिए उन्हें फुर्सत कैसे मिली?

मरीज ने नर्स से कहा ये मेरी अच्छी किस्मत है कि डॉ जबसन को फुरसत मिली और वह मेरा ऑपरेशन कर रहे हैं।

नर्स ने एक बार बार कहा यकीन मानिए, मेरा हैरत अभी भी बरकरार है कि दुनिया का सबसे अच्छा डॉक्टर आपका ऑपरेशन कर रहा है!!
इस बातचीत के बाद मरीज को ऑपरेशन थिएटर में पहुंचा दिया गया, मरीज का सफल ऑपरेशन हुआ और अब मरीज हँस कर अपनी जिंदगी जी रहा है।

मरीज के कमरे में आई महिला कोई साधारण नर्स नहीं थी, बल्कि उसी अस्पताल की मनोवैज्ञानिक महिला डॉक्टर थी, जिसका काम मरीजों को मानसिक और मनोवैज्ञानिक रूप से संचालित करना था, जिसके कारण उसे संतुष्ट करना था जिस पर मरीज शक भी नहीं कर सकता था। और इस बार इस महिला डॉक्टर ने अपना काम मरीज के कमरे में गुलदस्ता सजाते हुये कर दिया था और बहुत खूबसूरती से मरीज के दिल और दिमाग में बिठा दिया था कि जो डॉक्टर इसका ऑपरेशन करेगा वो दुनिया का मशहूर और सबसे सफल डॉक्टर है जिसका हर ऑपरेशन सफल ऑपरेशन होता है और इसी पॉजिटिविटी ने मरीज के अन्दर के डर को खत्म कर दिया था। और वह ऑपरेशन थियेटर के अन्दर यह सोचकर गया कि अब तो मेरा आपरेशन सक्सेज होकर रहेगा, मैं बेकार में इतनी चिन्ता कर रहा था।

'पॉजिटिविटी दीजिये लोगों को...यह आपदा काल है, इस आपदा काल में आप लोगों की जितनी पॉजिटिविटी बढ़ा सकें उतनी बढ़ाइये, और रोज परमात्मा से सभी के लिए प्रार्थना में सुख शांति स्वस्थ की कामना कीजिए जिससे हमारा यह देश और समस्त विश्व फिर से पुनः संपूर्ण रोगमुक्त स्वतंत्र हो और हमारा प्यारा भारत स्वस्थ भारत यह स्लोगन हमारा हो ।

मेहनत वह सुनहरी चाभी है जो बंद दरवाजे भी खोल देती है।

प्रतिक्रियाएं

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) -II, MAHARASHTRA, NAGPUR

संख्या.राजभाषा 8(II)/2021-22/जा.क्र.35
दिनांक:-11/06/2021

सेवा मे,
उपमहाप्रबंधक (कार्मिक),
कार्यालय मॉयल लिमिटेड,
मॉयल भवन,1ए,काटोल रोड,
नागपुर-440013

विषय : हिंदी पत्रिका "मॉयल भारती" के चतुर्थ अंक पर प्रतिक्रिया संबंधी ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "मॉयल भारती" के चतुर्थ अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद !

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर श्री रामअवतार देवांगन,महामंत्री,मॉयल कामगार संगठन का लेख 'रामराज्य', श्री अमित कुमार सिंह,वरि. प्रबंधक (कार्मिक) तिरोड़ी खान का लेख 'यांत्रिकी अनुवाद बनाम इंसानी अनुवाद' तथा श्री इम्मानूएल दीप उकवा खान की कविता 'जिंदगी का सफर' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं| पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

(श्रीमती पी.एस.सर्मा)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'लेखापरीक्षा भवन', डाक थैली क्र.220, सिविल लाईन्स, नागपुर - 440001
दूरभाष / Telephone - 0712-2564506 To 2564510
फैक्स / Fax - 0712-2524130
'Audit Bhavan', Post Bag No. 220, Civil Lines, Nagpur-440001
website : http://agmaha.cag.gov.in
e-mail : agauMaharashtra@cag.gov.in

एनटीपीसी NTPC

एन टी पी सी लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
NTPC Limited
(A Govt. of India Enterprise)
मौदा / Mouda ... मई 2021

संदर्भ : एनटीपीसी मौदा/मा. सं./राजभाषा अनुभाग/

सेवा में

श्रीमती पूजा वर्मा
राजभाषा अधिकारी
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

विषय : मॉयल लिमिटेड, नागपुर के मॉयल भारती अंक के बारे में ।

सम्माननीय महोदया,

आपके राजभाषा विभाग की " मॉयल भारती " का अंक 4 एनटीपीसी मौदा को प्राप्त हुआ । सबसे पहले मॉयल भारती का यह अंक भेजने के लिए एनटीपीसी लिमिटेड मौदा के तरफ से मैं आपका ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

हिन्दी देश की राजभाषा हैं और हम सभी का संवैधानिक दायित्व है की हम अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करे । मुझे आशा है की आपका यह मॉयल भारती का अंक राजभाषा हिन्दी के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण कार्य करेगा । आपके अंक में श्री राजेश श्रीवास्तव इनकी लिखी हुई कविता "दोषी कौन " अत्यंत सराहनीय है और ह्रदय को छु लेने वाली है । वैसे ही रामअवतार देवांगन जी का "रामराज्य " यह लेख वर्तमान परिस्थितियों की वास्तविकता दर्शाता है।

श्री अमित कुमार सिह जी ने "भारतीय परिप्रेक्ष में बौद्धिक सम्पदा प्रबंधन" इस लेख में सरल भाषा में अत्यंत सराहनीय आकलन किया है । इसके साथ ही सीएसआर योजना के अंतर्गत मॉयल फाउंडेशन द्वारा विभिन्न बीपीएल गरीब परिवारों को पोषण एवं कोरोना महामारी निवारण किट का वितरण का काम अत्यंत सराहनीय है ।

मॉयल लिमिटेड के मॉयल भारती इस अंक की सारी कहानियाँ, लेख और कविताएँ अत्यंत सराहनीय है और प्रशंशा के पात्र है । मै एनटीपीसी लिमिटेड मौदा के तरफ से इस मॉयल भारती अंक 4 की सराहना करता हु और आपको शुभकामनाएँ देता हूँ । आशा करता हूँ की मॉयल लिमिटेड राजभाषा हिन्दी के प्रचार और प्रसार के लिए ऐसे ही उत्कृष्ट कार्य करते रहे ।

धन्यवाद !

भवदीय

(संदीप सु. साखरे)
प्रबंधक (मा. सं.)/प्रभारी राजभाषा 6/5/21
मो. 9423762814

मौदा सुपर थर्मल पावर स्टेशन, मौदा–रामटेक रोड, पी.ओ. मौदा, जिला – नागपुर – 441104 (महाराष्ट्र)
Mouda Super Thermal Power Station, Mouda-Ramtek Road, P.O. Mouda Distt. Nagpur - 441001 (Maharashtra)
पंजीकृत कार्यालय : एन टी पी सी भवन, स्कोप कॉम्प्लेक्स, 7, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, लोधी रोड, नई दिल्ली - 110 003, टेली. Tele.: 24360100 तार/Cable : थर्मपावर/THERMPOWER
Registered Office : NTPC Bhavan, SCOPE Complex, 7, Institutional Area, Lodhi Road, New Delhi - 110 003, टेलेक्स/Telex : 031-74026 NTPC In फैक्स/Fax : 011-24361018
Visit : /ntpc1 /ntpcltd1 /ntpclimited /company/ntpc /ntpclimited

---

वर्ष 2021-22 के वार्षिक कार्यक्रम में ''12-प्र''

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा वर्ष 2021-22 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन हेतु जारी वार्षिक कार्यक्रम में इस बार ''12-प्र'' की राजनीति अत्यंत महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के कुशल मागदर्शन तथा प्रेरणादायक नेतृत्व में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने निम्नलिखित कार्यकलापों की शुरूआत करके कोविड की चुनौती को अवसर में बदल दिया है :-

अपनी राजभाषा नीति और माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा प्रयुक्त स्मृति विज्ञान से प्रेरणा लेकर निम्नलिखित स्तंभों पर आधारित ''12 प्र'' की रूपरेखा और रणनीति को तैयार किया गया है:

1. **प्रेरणा**
2. **प्रोत्साहन**
3. **प्रेम**
4. **प्राइज़ अर्थात् पुरस्कार**
5. **प्रशिक्षण**
6. **प्रयोग**
7. **प्रचार**
8. **प्रसार**
9. **प्रबंधन**
10. **प्रमोशन (पदोन्नति)**
11. **प्रतिबद्धता**
12. **प्रयास**

राजभाषा विभाग के अधिकारीगण विभिन्न राजभाषा बैठकों तथा विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/राष्ट्रीय बैंकों तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकों में आयोजित होने वाली कार्यशालाओं में उपर्युक्त कार्यढांचे का प्रयोग करते हैं।

दूसरों की सोच से अधिक कर दिखाना ही आपकी असली सफलता है।

मरा लक्ष्य दूसरों से बेहतर होना नहीं बल्कि मै अभी जो हु उससे बेहतर होना है

राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिए सारे देश में हिंदी और नागरी का प्रचार आवश्यक है। – लाला लाजपत राय

अखबारी हलचल

मॉयल में विश्व स्तरीय उच्च कोटी स्कीप प्रणाली लागू

भरवेली (जबलपुर एक्सप्रेस)।

मध्यप्रदेश के दक्षिण पूर्व में स्थित बालाघाट जिले की अर्थव्यवस्था को नया जीवन और मजबूती देने का जब भी सवाल खड़ा होता है तो उसमें सबसे पहला नाम केन्द्र सरकार के इस्पात मंत्रालय के अधीन मिनी रत्न ए शेड्यूल कंपनी मैंगनीज ओर इंडिया का नाम आता है। जिसकी बालाघाट जिले के भरवेली, उकवा, तिरोड़ी, सीतापठोर में मैंगनीज की खदान है जो अपने आसपास स्थित ग्रामीणों को बड़े पैमाने पर रोजगार उपलब्ध कराने के साथ जिले के बाजार को मजबूती प्रदान करती है। भरवेली मॉयल एशिया महाद्विप के उस मैंगनीज खदान में गिनी जाती है जहां उत्पादित होने वाला मैंगनीज की क्वालिटी विश्व स्तरीय है। कंपनी की बेगबॉन के रूप में इस खदान की पहचान बनी हुई है। बालाघाट नगर के अर्थव्यवस्था को नया जीवन देने में मॉयल का महत्वपूर्ण योगदान है। विगत दिवस दुर्भाग्यवश तकनीकि कारणों से भरवेली खदान स्थित स्कीप में खराबी आने के कारण [illegible] आर्थिक हानि का सामन[illegible] को करना पड़ा जिसस[illegible] कार्य भी प्रभावित हुआ। 4 लवल स्थित इस भूमिगत खदान में मजदूरों एवं भीतर खान से खनिज निकालने के लिए अलग-अलग स्कीप का सहारा लेना पड़ता था। अतः ऐसी परिस्थिती में जिस स्कीप से खनिज निकाला जाता है उसके टूट जाने से कार्य में भारी रूकावट आयी। इन विषम परिस्थितयों से निकलने एवं नयी कार्य प्रणाली लागू करने के [illegible] मुख्यालय के उच्चाधिकारियों को टीम एवं [illegible] कर्मचारियों [illegible] सतत् प्रयास [illegible] कंपनी ने नयी स्कीप योजना यहां पर लागू की है। जिसकी विशेषता यह है कि भारत में यह भूमिगत माईनिंग में कार्य करने वाली पहली योजना होगी। जहां पर स्कीप और केज दोनो एक साथ भूमिगत खदान के भीतर आएंगे-जाएंगे जिसके कारण कार्य में सुविधा होगी। अभी यह होता था कि अगर स्कीप को भीतर भेजना है तो केज को रोकना पड़ता था, दोनो को अलग-अलग करके उपयोग किया जाता था, परंतु अब यह स्थिति समाप्त कर दी गयी है। इससे सुरक्षा की स्थिती मजबूत होगी, कार्य में सरलता जाएंगी एवं उत्पादन वृध्दि [illegible]। उल्लेखित है कि मॉयल [illegible]वेली मॉयल के कार्यों में [illegible]करण एवं मशीनीकरण को [illegible]ता देने में पीछे नहीं है। भरवेली मॉयल में भूमिगत खदान [illegible]न कास्ट दोनो स्थान पर [illegible] रहकर न्यूनतम लागत में उत्पादन कार्य की वृध्दि के लिए अनेक प्रकार की नयी तकनीकि का उपयोग लगातार कर रही है। ताकि मैंगनीज की क्वालिटी में सुधार हो और प्रतिस्पर्धा के इस दौर में अपने उच्चतम स्थान को बनाएं रखे। मॉयल देश के कुल मैंगनीज उत्पादन का पचास प्रतिशत अपूर्ति करता है। भरवेली माईन में क्षतिग्रस्त स्कीप के सुधार के पश्चात जो नयी तकनीकि का उपयोग किया गया है। ये पूरे भारत में पहला प्रयोग है जिससे जिन कारणों के चलते विगत दिवस स्कीप टूटने की घटना घटी थी ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं हो पाएंगी और कार्य निर्वाद गति से सुरक्षित रहकर चलता रहेगा। खान प्रबंधक भाटी के अनुसार मॉयल प्रबंधन लगातार नयी-नयी तकनीकि का उपयोग करके कंपनी में उत्पादन कार्य में वृध्दि और कर्मचारियों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए अपने कार्य को आगे बडाने के लिए प्रयासरत।

मॉयल भरवेली में स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन

भरवेली (जबलपुर एक्सप्रेस)।

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी प्रधानमंत्री स्वच्छता अभियान पखवाड़े के अंतर्गत मॉयल लिमिटेड भरवेली खदान में स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन किया गया है। जिसके अंतर्गत नुक्कड़ नाटक के माध्यम से खदान परिसर के 6 लेबल एवं कामगार कर्मचारी कॉलोनियों में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से आम जनता को अपने घर एवं आसपास स्वच्छता बनाये रखने के लिये प्रेरित किया जा रहा है। नुक्कड़ नाटक के कलाकारों द्वारा संगीतमय प्रस्तुती के माध्यम से जनता को स्वच्छता संदेश दिया जा रहा है। कंपनी द्वारा बहुत पहले से कचरा गाड़ी के माध्यम से प्रतिदिन सुबह भरवेली खदान से कामगार कर्मचारी अधिकारी कॉलोनियों से घरों से कचरा एकत्रित करने का क्रम लंबे समय से चल रहा है। मॉयल लिमिटेड प्रतिवर्ष स्वच्छता पखवाड़े में कामगार कर्मचारी के कॉलोनियों में स्वच्छता को बनाये रखने के लिये विभिन्न आयोजनों के माध्यम से संदेश देने का ही प्रतिफल है कि मॉयल के आवासगृह के आसपास स्वच्छता सहजता के साथ देखी जा सकती है। इस पखवाड़े के संबंध में आयोजित नुक्कड़ नाटक कार्यक्रम में अभिकर्ता एवं उपमहाप्रबंधक समूह-1 मध्यप्रदेश व्ही.आर. परिदा, खान प्रबंधक उम्मेदसिंह भाटी भूमिगत खान प्रबंधक महेन्द्र जैन कार्मिक विभाग के प्रमुख असीम शेख मॉयल कामगार संगठन के पदाधिकारी अशोक गेडाम, वेदप्रकाश दीवान, जितेन्द्र धावड़े, राजेश आचार्या, कार्मिक विभाग के कर्मचारी हितेश गजभिये एवं उनके सहयोगियों की उपस्थिति के साथ कार्यस्थल पर कार्य करने पर कामगार कर्मचारी एवं कॉलोनी में रहने वाले रहवासी की उपस्थिति में उपरोक्त नुक्कड़ कार्यक्रम सफलता पूर्वक आयोजित किया गया।

हिंदी का श्रृंगार राष्ट्र के सभी भागों के लोगों ने किया है, वह हमारी राष्ट्रभाषा है। – चक्रवती राजगोपालाचारी

मॉयल लिमिटेड

कार्यस्थल पर कोरोना वायरस की रोकथाम के लिए अनिवार्य रुप से ली जाने वाली सावधानियाँ

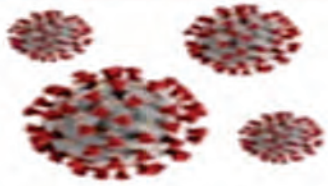

1. प्रत्येक कामगार, कर्मचारी, अधिकारी एवं ठेका श्रमिक कार्यस्थल पर आते ही सेनेटाईज मशीन द्वारा अपनी पूरी बॉडी को सेनेटाईज करवायें । तत्पश्चात अपने हाथों को अच्छी तरह से 30 सेकंड तक साबुन से धो लेवें ।
2. कैज में जाते समय अधिकारियों द्वारा दिये गये निर्देशों का कड़ाई से पालन करना अनिवार्य है ।
3. कार्य के दौरान कम–से–कम 01 से 02 मीटर शारीरिक दूरी बनाये रखने का अवश्य ध्यान रखें ।
4. कार्य के दौरान अपने हाथों को सेनेटाईज करते रहें ।
5. कार्य के दौरान कार्यस्थल पर किसी भी अनावश्यक चीज को ना छुयें एवं उपकरणों का उपयोग करने के बाद अपने हाथों को 30 सेकंड तक साबुन से अच्छी तरह से जरुर धोवें ।
6. खाना खाने के पूर्व अपने हाथों को अच्छी तरह से 30 सेकंड तक साबुन से साफ करें ।
7. खाने के अंतराल के समय अपना टिफिन/भोजन सामग्री तथा पानी की बॉटल दूसरों को ना देवें ।
8. कार्यस्थल पर अनावश्यक बातचीत ना करें ।
9. कार्य के दौरान संपूर्ण कार्य अवधि में फेस मास्क पहने रहना अनिवार्य है ।
10. कार्यस्थल पर अनावश्यक रुप से एकत्रित रहना निषेध है ।
11. ड्यूटी के दौरान बीड़ी, खर्रा, गुटखा, तंबाकू आदि का सेवन न करें । यदि कोई कामगार/कर्मचारी/अधिकारी/ठेका श्रमिक ऐसा करते हुये पाया जाता है तो उसके विरुद्ध कड़ी अनुशासनिक कार्यवाही की जायेगी ।
12. अपने हाथों को बार–बार होंठ, नाक, कान, आँख तथा पूरे चेहरे पर न छुयें एवं अपने फेस मास्क को बार–बार हाथ न लगायें ।
13. स्वच्छता का अवश्य ध्यान रखें ।
14. प्रत्येक दिन अपने कार्य से जाने के बाद, अपने कपड़ों को साबुन से धोवें तथा डेटॉल का पानी में उपयोग करते हुये स्नान करें । जिससे आपके शरीर तथा बालों में लगी हुई सभी गंदगी साफ हो जायेगी ।
15. कार्य में उपयोग आने वाले सभी साधनों एवं उपकरणों को छुने से पहले अच्छे तरीके से साफ कर लेवें ।
16. यदि आपको फेस मास्क को खाना खाने या पानी पीने के अंतराल में उतारना है तो डोरी से खोलें, ना कि फेस मास्क के मुख्य भाग पर हाथ ना लगाये ।

फेस मास्क को पुनः उपयोग लाने की विधि

1. बार–बार मास्क को ना छुयें ।
2. डोरी/रस्सी की सहायता से अपना मास्क निकालें ।
3. आपके द्वारा उपयोग किये गये मास्क को डेटॉल के पानी में कम–से–कम 20 मिनट तक भिंगोने के पश्चात अच्छी तरह से साबुन से धोकर, सुखाने के पश्चात मास्क का पुनः उपयोग किया जा सकता है ।

Help us to help you

आपने और अपने
प्रियजनों / सहकर्मियों
की रक्षा के लिए

पांच

का पालन करें

वैक्सीनेशन के बाद कोविड-19 का उचित व्यवहार

मास्क का
सही इस्तेमाल करें

बार-बार और अच्छी तरह से
साबुन और पानी से हाथ धोएं
या हैंड सैनिटाइजर का इस्तेमाल करें

6 फीट (2 गज) की
शारीरिक दूरी बनाए रखें

यदि आपको कोई लक्षण
दिखाई देते हैं,
तो आत्म अलगाव का संकेत दें

यदि आपको
कोई लक्षण दिखाई देते हैं,
तो तुरंत अपने आप को जांच लें

मॉयल
MOIL

**प्रतिदिन कोविड-19 के उचित व्यवहार का पालन करें
और कोविड-19 को दूर रखने में मदद करें**

Adding Strength to Steel

हर एक काम देश के नाम